बेशक मोमिन आपस में भाई-भाई हैं
(सूरह अल-हुजुरात 10)

''बातिल का रद्द करेंगे
हम हैं बरेली वाले''

हज़रत अली और मुआविया भाई-भाई

बाग़ी और दुश्मन में फ़र्क़

मुख़ालिफ़ और दुश्मन में फ़र्क़

हज़रत अली और अमीरे मुआविया के दरमियान
इख़्तिलाफ़ात का तहक़ीकी जाइज़ा

रद्दे राफ़ज़ियत ख़ारजियत व मौलाईयत

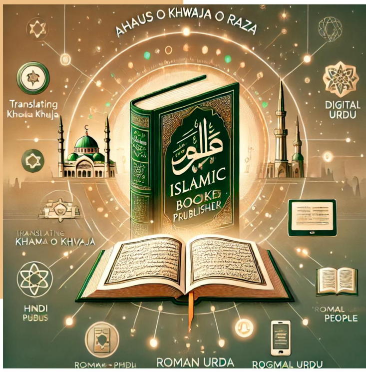
तालीफ़
सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
www.ghausokhwajaorazatrust.com

GKR Digital PUBLISHER

GKR Digital PUBLISHER

About Publisher

GKR (Ghaus o Khwaja o Raza) Digital Publisher ek Sunni Islamic digital publishing platform hai jo Islami kitaabon aur taleemaat ko nayi soch aur updated andaz me logon tak pahuchane ka kaam karta hai. Yah platform khas kar Islami kitaabon ko **Hindi aur Roman** script me translate karta hai, taaki ilm-e-deen (Islamic knowledge) ko aam logon aur khaas tabqe (awam aur khwas) tak asaan aur samajhne layak format me pesh kiya ja sake.





Join Team Member

Agar aap GKR ke saath judna chahte hain ya is platform ke zariye koi kitaab Translate/publish karana chahte hain, to yah ek behtareen moka hai ilm-e-deen ko doosron tak pahunchaane ka.

Founder :
Writer | Translator | Creator | Designer | Composer
Sufi Anwar Raza Khan Qadri
9534124663 (GP/Phone)
(Mureede Tajush Sharia)
Ba Faize Roohani Huzoor Khawaja Garib Nawaz

www.ghausokhwajaorazatrust.com

Donate to Islam

Anwar Khan

Indian Bank 8894

किताब नाम	:	**हज़रत अली और मुआविया भाई-भाई**
मुसन्निफ़	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
बानी	:	Ghaus o Khawaja o Raza Trust
भाषाः	:	हिन्दी
कैटेगरी	:	अक़ाइद की इस्लाह
मुतर्जिम व मुर्त्तिब	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
कंपोज़िंग और डिज़ाइनिंग	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
PDF	:	GKR Digital Publisher
साल	:	मई 2026
पेज	:	93

हम्द व सना

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए

- जो 1 माबूदे हक़ीक़ी है । उसका कोई शरीक नहीं, न ज़ात में, न सिफ़ात में, न अफ़आल (काम) में, न अहकाम में, न अस्मा में
- जिसने अपनी क़ुदरत से हमे तमाम मख्लूक में सबसे अफ़ज़ल यानी इंसान बनाया
- जिसने अपने फ़ज़्लों करम से हमे तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल अपने हबीब का उम्मती यानी मुसलमान बनाया
- जिसने अपने रहमो करम से हमे इस उम्मत के सवाद ए आज़म में से यानी सुन्नी बनाया।
- जिसने दौर के मुताबिक अपने वली हुज़ूर आला हज़रत के जरिये हमे सुन्नियों में अफज़ल यानी बरैलवी बनाया।
- तमाम तारीफें उस ज़ात के लिए है जिसके लिए हम बरैलवी हक़ वालों से महब्बत और बातिल फ़िरकों से नफ़रत करते है।
- दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया व सलामती हो असहाब पर और नबी के आल पर और सलामती हो उन तमाम मोमिनीन व मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किय

फ़ेहरिस्त

अर्ज़े मुअल्लिफ़

इस्लाम की तारीख़ में नबी करीम ﷺ के बाद सबसे बुलंद और बा-इज़्ज़त मक़ाम अहले बैत (नबी ﷺ का घराना) और सहाबा-ए-किराम (नबी ﷺ के साथी) का है। यह वह मुक़द्दस जमाअत है जिन्हें अल्लाह त'आला ने अपने आख़िरी नबी ﷺ की सोहबत, दीन की ख़िदमत और इस्लाम की नुसरत के लिए मुंतख़ब फ़रमाया। इन की ज़िन्दगियां उम्मते-मुस्लिमा के लिए ईमान, तक़वा, क़ुरबानी और हिदायत का रोशन नमूना हैं।

ताहम तारीख़े-इस्लाम के एक दौर में बाज़ ऐसे हालात पेश आए जिन के नतीजे में सहाबा-ए-किराम के दरम्यान इज्तिहादी इख़्तिलाफ़ात पैदा हुए। यह इख़्तिलाफ़ात फ़हम, हालात और इज्तिहाद की बुनियाद पर थे, जिन में हर फ़रीक़ का मक़सद दीन की ख़िदमत और उम्मत की भलाई था। इन्हीं तारीख़ी वाक़िआत के तनाज़ुर में दो अज़ीम शख़्सियात का ज़िक्र ख़ास तौर पर किया जाता है: हज़रत अली बिन अबी तालिब और हज़रत अमीरे मुआविया رضي الله عنهما।

यह बात समझना निहायत ज़रूरी है के इन इख़्तिलाफ़ात को बाद के अदवार में बाज़ लोगों ने ग़लत अन्दाज़ में पेश किया और उन्हें दुश्मनी और अदावत का रंग देने की कोशिश की, हालांकि हक़ीक़त यह है के यह इख़्तिलाफ़ात इज्तिहादी नौइयत के थे, ना के नफ़सानी और दुनिया तलबी पर मब्नी।

इस्लाम हमें यह तालीम देता है के सहाबा-ए-किराम के बारे में हमारी ज़ुबान और दिल हर क़िस्म के बुग़्ज़-ओ-अदावत से पाक हों। क़ुरआने-करीम में अल्लाह त'आला ने अहले-ईमान के बाहमी तअल्लुक़ को बयान करते हुए फ़रमाया:

"इन्नमल मुअमिनूना इख़्वतुन" (सूरह अल-हुजुरात: 10)

"बेशक मोमिन आपस में भाई भाई हैं।"

इस आयते-मुबारका की रोशनी में वाज़ेह होता है के ईमान का रिश्ता तमाम मुसलमानों को बाहमी उख़ुव्वत और मुहब्बत से जोड़ता है, और सहाबा-ए-किराम इस उख़ुव्वत के सबसे बुलंद मक़ाम पर फ़ाइज़ थे। उन के दरम्यान जो भी इख़्तिलाफ़ात हुए, वह उन के ईमान, तक़वा और एक दूसरे के एहतिराम को कम नहीं करते।

इस किताब का मक़सद यह है के तारीख़ को सही तनाज़ुर में समझा जाए, ग़लत-फ़हमियों को दूर किया जाए, और उम्मते-मुस्लिमा में इत्तिहाद, मुहब्बत और सहाबा-ए-किराम के एहतिराम के जज़्बे को मज़बूत किया जाए। अल्लाह त'आला हमें हक़ को समझने, इस पर अमल करने और सहाबा-ए-किराम के अदब को क़ायम रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मुतर्जिम
सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी
(मुरीद-ए-ताजुश्शरीह)
Writer I Translator I Creator I Designer I Composer
राँची, झारखण्ड (इण्डिया)
बानी : ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट
(Whataap) 9534124663

बाब 1

(इख़्तिलाफ़ात और फ़ितनों का दौर)

इस बाब में नबूवत से क़यामत तक का मुख़्तलिफ़ दौर का ज़िक्र है खासकर फ़ितनों का दौर का जो मौजूदा दौर में फ़ितने ज़ाहिर हो चुके है उस फ़ितनों का इल्म होना बहुत ही जरूरी है क्योंकि हदीस में है फ़ितनों से अपना दीन वही बचा पायेगा जो फ़ितनों का इल्म रखता हो जैसे बातिल फ़िरकों का फ़ितना |

इस्लामिक तारीख़ का वह हिस्सा है जिसकी तरफ़ नबी-ए-करीम ﷺ ने पहले ही उम्मत को आगाह कर दिया था| कई अहादीस में आने वाले उम्मत की इख़्तिलाफ़ात, आज़माइशों और फितनों का ज़िक्र मिलता है|

इख़्तिलाफ़ात क्या है?

इख़्तिलाफ़ात का मतलब है किसी मसले में राय, समझ या तरीक़े का अलग होना| हर इख़्तिलाफ़ गुमराही या दुश्मनी नहीं होता| अगर इख़्तिलाफ़ कुरआन, सुन्नत और शरीअत के दायरे में रहे, अदब और इंसाफ़ के साथ हो, तो वह इल्मी इख़्तिलाफ़ कहलाता है; लेकिन जब वही इख़्तिलाफ़ नफ़रत, तअस्सुब, तकब्बुर और फूट का ज़रिया बन जाए, तो वह फ़ितना बन जाता है|

सहाबा-ए-किराम के दौर में भी कुछ इज्तिहादी इख़्तिलाफ़ हुए, मगर उनके दिलों में एक-दूसरे की मोहब्बत, अदब और खैरख़्वाही मौजूद थी| अहले सुन्नत वल जमाअत का अकीदा यह है कि ऐसे मामलों में बदज़बानी या तन्क़ीस नहीं की जाती, बल्कि ख़ामोशी, एहतियात और हुस्ने-ज़न का रास्ता अपनाया जाता है|

अल्लाह त'आला ने फ़रमाया:

“और आपस में झगड़ा न करो, वरना तुम कमज़ोर पड़ जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी|” (सूरह अल-अन्फाल: 46)

उस दौर मे इख़्तिलाफ़ात की दो क़िस्में

इल्मी या फ़िक्ही इख़्तिलाफ़

जिसमें दलीलों की बुनियाद पर अलग राय होती है, मगर दीन और अक़ीदे की बुनियाद एक रहती है।

नफ़सानी और फ़ितनापरस्त इख़्तिलाफ़

जिसमें हक़ से ज़्यादा अपनी जमाअत, शख्सियत या नफ़्स की पैरवी की जाती है, और यही उम्मत में फूट का सबब बनता है।

उम्मत में इख़्तिलाफ़ होगा

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

तर्जुमा : **"जो तुम में से ज़िंदा रहेगा वह अनक़रीब बहुत इख़्तिलाफ़ देखेगा।"**(मसनद इमाम अहमद मबन हमबल)

उम्मत-ए-मुहम्मदिया में इख़्तिलाफ़

किताब सवाइके मुहर्राका मे है

हुज़ूर ﷺ की वफ़ात के वक़्त तमाम मुसलमान एक ही अक़ीदे और एक ही तरीक़े पर क़ाइम थे, जैसा कि 'अमदी से, सय्यद ने शरह-ए-मवाकिफ़' में बयान किया है। वह कहते हैं, सबसे पहले उन इज्तिहादी उमूर में इख्तिलाफ़ रूनुमा हुआ जिनसे कुफ्र-ओ-ईमान वाजिब नहीं होता और इस इख्तिलाफ़ से इन लोगों की ग़रज़ यह थी कि मरासिम-ए-दीन (दीनदारी) और शरह-ए-क़वीम (दीन की सीधी, सही और मज़बूत तशरीह) के तरीक़-ए-कार को क़ाइम किया जाए। और इनका यह इख्तिलाफ़ उसी तरह का था जैसे कि उन्होंने हुज़ूर ﷺ के मर्ज़-उल-मौत में आप के इस क़ौल पर इख्तिलाफ़ किया था कि:

"ائتوني بقرطاس أكتب لكم كتاباً لا تضلوا بعدي"

तर्जुमा : मुझे काग़ज़ दो ताकि मैं तुम्हें ऐसी तहरीर लिख दूँ जिससे तुम लोग मेरे बाद गुमराह न होगे। हज़रत उमर رضي الله عنه ने तो यहाँ तक कह दिया था कि

हुज़ूर तकलीफ़ के ग़लबे की वजह से ऐसा फरमा रहे हैं, हमें अल्लाह त'आला की किताब काफ़ी है। जब इस बात पर काफ़ी शोर-ओ-ग़ुल हुआ तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

"मेरे यहाँ से चले जाओ, मेरे पास झगड़ा करना दुरुस्त नहीं।"

इस ख़बर से हमें मालूम होता है कि यह झगड़ा इमामत और मंसब-ए-ख़िलाफ़त के बारे में था, लेकिन यह निज़ा' (संघर्ष) उस वक़्त खत्म हो गया जब हज़रत अली ﵁ ने अला रू'ऊस-इल-अश्हद (सबके सामने) हज़रत अबू बक्र ﵁ की बैअत कर ली और हज़रत अबू बक्र के ज़माने में मुसलमान मुत्तहिद (एक) हो गए। *(अल-लवाइह अल-कुद्सिय्यह लिस-सफ़ारिनी अल-मुतवफ्फा सनह 1188 और अल-तबीर पृ. 35)*

और फिर हज़रत उमर और हज़रत उस्मान ﵄ के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में भी इस इख्तिलाफ़ ने सर उठाया, हाँ आम इंतिज़ामी उमूर में अगर किसी को आप से कोई तकलीफ़ पहुँची हो और उस पर इख्तिलाफ़ हुआ हो तो यह अलग बात है और आप की शहादत इस बात के नतीजे में हुई कि ग़ैर-मुस्लिम मुसलमानों की सफ़ों में घुस आए थे और आप का क़त्ल एक अज़ीम सानिहा और बड़ा फितना था क्योंकि दुश्मनान-ए-दीन मुसलमानों में फितना-ओ-फ़साद की आग भड़का कर मज़बूत हो चुके थे, यहाँ तक कि आप के कातिलों और आप को बे-यार-ओ-मददगार छोड़ देने वालों में वसी' पैमाने पर इख्तिलाफ़ पैदा हो गया और हज़रत अली ﵁ के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में यह फ़ैसला आप पर आ पड़ा।

फिर आप के और अस्हाब-ए-जमल और मुआविया और अहल-ए-सिफ़्फीन के दरमियान मारक़ा-आराई हुई और दो गिरोह के दरमियान जो कुछ हुआ उस ने भी इख्तिलाफ़ को हवा दी जिस ने हज़रत अली ﵁ के पहरोकारों और आप के बग़ियों में इख्तिलाफ़ को मज़बूत किया क्योंकि आप ने तहकीम के बारे में रज़ामंदी का इज़हार किया था इस से **"शिया और ख़वारिज जैसे फ़िर्क़े पैदा हो गए।"** मगर मुहाजिरीन-ओ-अंसार में से जिन लोगों ने आप के अहद-ए-ख़िलाफ़त में आप की पैरवी की वह लोग मुख़्लिस थे, मगर वह मुसलमानों की मसलहत के नुक़्ता-ए-निगाह से इज्तिहादी तौर पर आप से अलग रहे। वह अस्हाब-ए-रसूल में से किसी की तन्क़ीस (बुराई) न करते थे।

जंग-ए-सिफ़्फीन में हज़रत अली के साथ अस्हाब-ए-बैअत-ए-रिज़्वान में से आठ सौ (800) सहाबी थे जिनमें से आप के झंडे तले तीन सौ (300) ने शहादत पाई। इन के इलावा भी ऐसे सहाबा मौजूद थे जो हज़रत अली ﷺ से मुहब्बत रखते थे मगर उन्होंने तक़्वा के बाइस आप के साथ जंग में शिर्कत नहीं की जैसे कि हज़रत इब्न उमर, बल्कि जंग-ए-जमल में आप के साथ जंग करने वाले भी आप से मुहब्बत रखते थे, जैसे हज़रत तल्हा और ज़ुबैर और हज़रत उम्म-उल-मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा।

इन लोगों का मक़सद जंग करना न था बल्कि यह सब कुछ उन क़ातिलीन-ए-उस्मान की साज़िश के नतीजे में हुआ जो हज़रत अली के लश्कर में मौजूद थे और उन्हें यह ख़ौफ़ लाहिक़ था कि हज़रत अली उन्हें हज़रत उस्मान के वारिसों के सुपुर्द कर देंगे। पस उन्होंने फ़रीक़ैन के दरमियान जंग बरपा कर दी। और यह इस मअनी में शीया लक़ब इख़्तियार कर के मंज़र-ए-आम पर आए, जैसा कि अब्दुल अज़ीज़ देहलवी ने ज़िक्र किया है। इन दो तीन साल के अंदर लश्कर में एक नया रुझान पैदा होने लगा, और उस जमाअत के कुछ लोगों में दूसरे सहाबा पर हज़रत अली ﷺ की फ़ज़ीलत को ग़ुलू के अंदाज़ में बयान किया जाने लगा। उन्होंने बताया है कि अबुल अस्वद अल-दुवाली और हाफ़िज़ अब्दुर रज़्ज़ाक़ साहिब-उल-मुसन्नफ़ इसी अक़ीदे के हामिल थे। हज़रत अली ﷺ के कानों तक जब इन लोगों की यह बात पहुँची तो आप ने फरमाया:

"لئن سمعت أحداً يفضلني على الشيخين رضي الله عنهما ألا حددته حد الفرية"

तर्जुमा : **"अगर मैंने सुना कि कोई शख़्स मुझे शैख़ैन (हज़रत अबू बक्र-ओ-उमर) पर फज़ीलत दे रहा है तो मैं उसे झूठ की हद (सज़ा) लगाऊँगा"।**

मौजूदा दौर मे इख़्तिलाफ़ के 3 अक़साम

आला हज़रत फ़रमाते हैं:

मुसलमानों! मसाइल तीन क़िस्म के होते हैं:

1. ज़रुरियाते दीन उन का मुन्किर बल्कि उन में अदना शक करने वाला बिल यक़ीन काफ़िर होता है ऐसा कि जो उस के कुफ़्र में शक करे वोह भी काफ़िर,

2. ज़रूरियाते अक़ाइदे अहले सुन्नत उन का मुन्किर बद मज़हब गुमराह होता है,

वोह मसाइल कि उ़लमाए अह्ले सुन्नत में मुख़्तलफ़ फ़ीह हों उन में किसी तरफ़ तकफ़ीर व तद़लील मुम्किन नहीं - *(फ़तावा रज़विया शरीफ़, जिल्द 29, पेज 414–415)*

और फ़रमाते हैं:

मसाइले क़िस्मे सोम (यअ्नी तीसरी क़िस्म के मसाइल) कि उन में उ़लमा व अइम्मह अहले सुन्नत मुख़्तलफ़ (एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ करने वाले) रहे हैं .... उन में मुस्बत व नाफ़ी (यअ्नी तस्लीम करने वाले और इन्कार करने वाले) किसी पर मआ़ज़ल्लाह कुफ्र तो क्या गुमराही या फ़िस्क़ का भी हुक्म नहीं हो सकता - [फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द 29, पेज 416]जब किसी मस्अले में उ़लमाए अहले सुन्नत का इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उस काम पर अल्लाह पाक अ़ज़ाब नहीं देगा - और ऐसे हज़रात (यअ्नी इख़्तिलाफ़ी मसाइल पर अ़मल करने और अ़मल न करने वाले लोगों) पर काफ़िर, गुमराह और गुनाहगार का भी हुक्म नहीं हो सकता - लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिए कि तमाम सुन्नी सहीहुल अ़क़ीदह बा-अ़मल आलिमे दीन का अदब व एहतिराम करें, इख़्तिलाफ़ी मसाइल पर अ़मल करने और अ़मल न करने की वजह से उ़लमाए अहले सुन्नत और अ़वामे अहले सुन्नत को बुरा न कहें -

हज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़िई फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला उस काम पर अ़ज़ाब नहीं देगा जिस में उ़लमा ए हक़ का इख़्तिलाफ़ है - (रसाइले अ़ल्लामह मुल्ला अ़ली क़ारी, जिल्द 3, पेज 118)

कौन सा इख़्तिलाफ़ रहमत है

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि 'इख्तिलाफु उम्मती रहमतन।" यानी मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ भी रहमत है।

बाज़ लोगों ने किसी सूफी से पूछा कि वह कौन से आलिम हैं जिनका इख्तेलाफ रहमत है। फरमाया :

तरजमा : 'यानी यह वह लोग हैं जो कुरआन शरीफ को मजबूती से थामे हुए रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इत्तेबा और अस्हाबे रसूल

की इक्तिदा करते है|" लिहाजा दीन की फुरूई बातों मे इख्तिलाफ रहमत है और उसूले दीन में इख़्तिलाफ़ बिदअत और गुमराही| (सबअ सनाबिल शरीफ, पहला सुबुला, पेज 32 हिंदी)

फुरुई इख़्तेलाफ़ रहमत

यह वह मसलों में मामूली फ़र्क़ होता है जहां इज्तिहाद की गुंजाइश हो उदाहरण: इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़ई का वुज़ू के कुछ मसलों में फ़र्क़|

हदीस: "मेरे उम्मती का इख़्तिलाफ़ रहमत है" (बैहक़ी)|

रहमत वाला इख़्तिलाफ़ की शर्तें:

- ✓ सहाबा/सलफ़-ए-सालेहीन के सही तरीक़े पर हो|
- ✓ दलीलों की बुनियाद पर हो (सिर्फ़ हवा से न हो)|
- ✓ आपसी इत्तेहाद और अदब बरकरार रहे)|

मोमिन मोमिन का भाई होता है

अबू दाऊद ने अबू हुरैरा रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया एक मोमिन दूसरे मोमिन का आइना है और मोमिन मोमिन का भाई है उसकी चीज़ों को हलाक होने से बचाये और गीबत में उसकी हिफाज़त करे|(तिर्मिज़ी हदीस नो| 1929) इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब, पेज 194)

अमीरे मुआविया ﵁ मोमिन है

हदीस मे रसूलुल्लाह ﷺ की पेशीनगोई:

तजुम : **"मेरा बेटा हसन सरदार है, अल्लाह इसके ज़रिए दो बड़े गिरोहों (हज़रत अली और हज़रत मुआविया) में सुलह कराएगा|"**

(सहीह बुखारी (हदीस नंबर: 3746 - किताब अल-मनाकिब, बाब मनाकिब अल-हसन वल-हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

इस हदीस का इसारा जंगे सिफफईन मे 1 गिरोह हज़रत अली और दूसरा गिरोह हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के तरफ थी | और कुरआन मे सुलह का हुक्म सिर्फ ईमान वालों के बीच करने का है यानी हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ मोमिन है |

अमीरे मुआ़विया ﵁ तमाम मोमीनों का मामू है

हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी क़ुद्दिसा सिर्रह मस्नवी शरीफ़ में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदीअल्लाहु अन्हु को अमीरुल मोमिनीन रदीअल्लाहु अन्हु और तमाम मुसलमानों का मामू लिखा है | (हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ पर एक नज़र, पेज)

अमीरे मुआ़विया ﵁ जन्नती है

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया के मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो समुन्दर पर जिहाद करेगा उन पर जन्नत वाजिब हो चुकी (बुख़ारी जिल्द 1)

सब से पहले समुन्दर पर जिहाद करने वाले हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हु हैं और इस हदीस में उनकी वाज़ेह और ज़बरदस्त मनक़बत मौजूद है (बुख़ारी जिल्द 1) लिहाज़ा अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हु जन्नती हैं न के बाग़ी और मुर्तद| और जो शख़्स इतनी तस्रीहात के बावजूद अमीरे मुआविया ﵁ पर ज़ुबान दराज़ी करता है, वो ख़ुद बाग़ी है और मुर्तद हो कर मरेगा (जो अल्लाह से अदावत रखता है और उसके ख़िलाफ़ अल्लाह का ऐलान ए जंग है|)

मुआविया के दरबार में अली का ज़िक्र

इमाम मुहम्मद इब्न महमूद आमली नफाइस उल-फुनुन में रिवायत की कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के दरबार में अली ﵁ का ज़िक्र हुआ तो हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने फ़रमाया कि "अली शेर थे, अली चौदहवीं रात के चाँद थे, अली रहमत ए ख़ुदा की बारिश थे|" हाज़िरीन में से किसी ने पूछा "क्या आप अफ़्ज़ल हैं या अली?" तो आप ने फ़रमाया "अली के क़दम अबू सूफियान की आल से अफ़्ज़ल हैं|" फिर उन से कहा गया कि आप ने

हज़रत अली से जंग क्यों की? तो फ़रमाया "अल-मुल्क अक़ीम" यानी मुल्की जंग थी। (किताबुन नहिया)

हज़रत अमीरे मुआविया ﷛ ने एक बार ज़िरार इब्न हमज़ाह से कहा कि मुझे अली इब्न अबी तालिब के औसाफ सुनाओ। उन्हों ने अर्ज़ किया कि मुझे इस से माफ़ रखो। हज़रत अमीरे मुआविया ﷛ ने कहा तुम्हें अल्लाह की क़सम, ज़रूर सुनाओ। ज़िरार इब्न हमज़ाह ने निहायत फ़सीह व बलीग़ तौर पर अली रज़ीयल्लाहु अन्हु की मन्क़बत सुनाई जिस का ख़ुलासा तरजुमा हसब-ए-ज़ाइल है:

अली रदीअल्लाहु अन्हु बड़ी सख़ावत वाले, सख़्त क़ुव्वत वाले थे। फ़ैसला कुन बात कहते थे, अद्ल का फ़ैसला करते थे। उन की जानिब से इल्म की नहरे बहती थीं। उन की ज़ुबान पर इल्म बोलता था। दुनिया और दुनिया की टाप-टाप से मुतनफ़्फ़िर थे। रात की तन्हाई और वहशत पर मायिल थे। रातों को रोते थे। अक्सर आख़िरत की फ़िक्र में रहते थे। मोटा लिबास, मामूली खाना पसन्द फ़रमाते थे।

लोगों में आम शख़्स की तरह रहते थे। जब उनसे कुछ पूछते तो फ़ौरन जवाब देते। जब हम उन्हें बुलाते तो फ़ौरन आ जाते थे। इस बे-तकल्लुफ़ी के बावजूद उन की ख़ुदादाद हैबत का ये हाल था कि हम उनसे गुफ़्तगू न कर सकते थे। दीनदारों की ताज़ीम फ़रमाते, मसकीनों को अपने क़रीब रखते थे। अली के दरबार शरीफ़ में कमज़ोर मायूस न था, क़वी दिलेर न था। क़सम ख़ुदा की, मैंने अली को बहुत दफ़ा ऐसा देखा कि रात के तारे ग़ायब हो जाते थे, इस हाल में कि आप ऐसा रोते थे जैसे किसी को बिच्छू काट ले और रो-रो कर फ़रमाते थे कि अफ़सोस अफ़सोस, उमर थोड़ी है, सफ़र लम्बा है, सामान थोड़ा है, रास्ता ख़तरनाक है। और आप की दाढ़ी से आँसुओं के क़तरे टपकते थे और फ़रमाते थे: अफ़सोस! अफ़सोस!

हज़रत अमीरे मुआविया ﷛ ये सुन कर ज़ार-ज़ार रोने लगे और फ़रमाते थे कि क़सम ख़ुदा की, अबुल हसन (अली) ऐसे ही थे, ऐसे ही थे, ऐसे ही थे। (सवाऐक़ मुहर्रिक़ा) (हज़रत अमीरे मुआविया ﷛ पर एक नज़र)

मोमिन मोमिन के बीच इख़्तिलाफ़ हो तो क्या करे ?

कुरआन मे अल्लाह त'आला का फरमान

तर्जुमा : **"बेशक मोमिन आपस में भाई-भाई हैं, इसलिए अपने दो भाइयों के बीच सुलह करवा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहमत की जाए।"** (सूरह अल-हुजुरात (49:10)

अमीरे मुआविया ﷺ से बुग़्ज़ रिफ़्ज़ है

सुन्नियों के अक़ाइद की पहचान के लिए 20 शर्तें मे से ये सीरीअल नं 5 मे आला हज़रत फरमाते है

जंग-ए-जमल व सिफ़्फ़ीन में हक़, हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली कर्रमल्लाहु त'आला वज्हहुल करीम के साथ था। लेकिन मुख़ालिफ़ीन में जो सहाबा-ए-किराम थे (जैसे हज़रत आयशा, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत मुहम्मद इब्न तल्हा, अमीरे मुआविया ﷺ), उनकी ग़लती ग़लती-ए-इज्तिहादी थी। इसलिए उन पर तअन करना सख़्त हराम है।

उनकी निस्बत कोई कलमा-ए-गुस्ताख़ी कहना बेशक रफ़्ज़ है और दाइरा-ए-अहले सुन्नत से खारिज है। जो किसी सहाबी की शान में कलमा-ए-तअन ओ तौहीन कहे, उन्हें बुरा जाने, फ़ासिक़ माने, उन में से किसी से बुग़्ज़ रखे मुतलक़न राफ़िज़ी है। (फ़तावा रज़विया मुतर्जम, जिल्द 29, सफ़ा 616 – नया एडीशन)

इख़्तिलाफ के दौर में क्या करें ?

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमरो ﷺ नबीए अकरम ﷺ का यह फ़रमान नक़्ल करते हैं कि उस ज़माने में तुम्हारा क्या हाल होगा जो अनकरीब सामने आएगा जिसमें अच्छे लोग रुखसत हो जाएंगे और नाकारा (नालायक) लोग बाकी रह जाएंगे उनके वादे और उनके अमानत सब फसाद का शिकार हो जाएंगे, वोह एक दूसरे के साथ इख़्तिलाफ करेंगे और वोह इस तरह हो जाएंगे नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उंगलियाँ एक दूसरे में पेवस्त करके इशारा फ़रमाया, लोगों ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आखिर उस वक्त हमें क्या करना चाहिए जब यह सूरत

सामने आए नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस चीज को तुम नेकि समझो उसे इख्तियार करो और जिसे तुम गुनाह समझो उसे तर्क करो, अपने खास (परहेज़गार) लोगों की तरफ मतवज्जो हो जाओ आम लोगों को छोड़ दो। (इब्ने माजा, हदीस न. 3957)

नुबुव्वत से क़यामत तक का पाँच दौर

हदीस : रसूल ﷺ ने फरमाया (पहला दौर) "तुम्हारे दरमियान नुबुव्वत बाक़ी रहेगी, जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; (दूसरा दौर) फिर ख़िलाफ़ते राशिदह होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; (तीसरा दौर) फिर काट डालने वाली हुकूमत होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; (चौथा दौर) फिर ज़ोर-ज़बरदस्ती वाली हुकूमत होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उसे उठाना चाहेगा; (पाँचवा दौर) फिर (आहख़र में) नुबुव्वत के तरीके पर खिलाफ़त (दुबारा) क़ायम होगी (यानी हज़रत महदी अलैहिस्सलम और हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना)", फिर रावी (या आक़ा) ख़ामोश हो गए." (मुस्नद इमाम अहमद, हदीस न. 18406)

यानी दौरे नुबुव्वत से क़ियामत तक दुनिया में होने वाली हुकूमतें पांच तरह की होंगी:

1. निज़ामे नुबुव्वत (हमारे नबी ﷺ का हयाती दौर)

2. निज़ामे ख़िलाफ़ते राशिदह (नुबुव्वत ही के तरीक़े पर),

3. निज़ामे काट-मार कि जो जिंदा बचा वही बादशाह रहा,

इन तीनों तरीक़ों का जमाना गुज़र चुका है; इस वक़्त जो दौर है वो है चौथे तरीक़े का:

4. 'मुल्कन् जब्-रिय्यन' यानी जोर-ज़बरदस्ती की हुकूमत, ई. 2024 इसी दौर में है इस निज़ाम का इख़्तिताम भी क़रीब है, इन्-शा अल्लाह !हां आखिर में वही होगा जो शुरू में था:

5. 'ख़िलाफ़तन् अला मिन्हाजिन् नुबुव्वह' यानीः नुबुव्वत ही के तरीक़े पर फिर से खिलाफ़त क़ायम होगी. ये क़ियामत के क़रीब सबसे आख़िरी दौर होगा, जब ख़लीफ़तुल्लाह, इमाम महदी (रदियल्लाहु अन्हु) पूरे जाहो जलाल के साथ रूनुमा होंगे, इन्-शा अल्लाह !

फिर मुसलमानों की बेबसी दूर होगी, उनके दर्द का इलाज होगा. फ़िलिस्तीन, दारुल् ख़िलाफ़त होगा; और कश्मीर, यमन, सीरिया, उईगुर वगैरह के बेबस मुसलमानों की आहें कुफ़्फ़ार पर अज़ाब बनकर टूटेंगी. (मक़ालाते अहसनी, पेज 241)

हुज़ूर ﷺ का जमाना

हुज़ूर अकरम ﷺ का इरशाद है सबसे बेहतर ज़माना मेरा ज़माना है इसके बाद वह ज़माना जो इससे मुत्तसिल है फिर का जो उसके बाद आयेगा ।(काशफूल महज़ूब, पेज 130 हिंदी)

सहाबा का ज़माना

अल्लाह त'आला फरमाता है-

सबसे पहले ईमान में सबक्त करने वाले मुहाजेरीन व अंसार हैं और बाकी लोग जो भलाई के साथ उनके बाद ईमान लाये।। हुज़ूर के बाद सहाबा का ज़माना सब ज़मानों से हर लिहाज़ से अफ्ज़ल था। दर हक़ीक़त सहाबए किराम का ज़माना ही खेरुल कुरून था अल्लाह त'आला ने इनको अपने नबी ﷺ की सोहबत से सरफराज़ फ़रमाया और उनके दिलों को तमाम ऐबों से महफूज़ रखा था। (काशफूल महज़ूब, पेज 130 हिंदी)

हर आने वाला दौर पहले से बुरा होगा

हजरत अनस रदीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है के, अल्लाह के रसूलने फ्रमायाः 'हर आने वाला ज़माना पहले ज़माने से बुरा होगा। बुखारी शरीफ, हदीस 7068)

फितने का दौर

हज़रत अली ﷺ की खिलाफ़त सबसे ज़्यादा फितनों से दो-चार रही। उस्मान ﷺ के क़त्ल के बाद बग़ावत, खारिजी, और सियासी तनाज़आत उभर आए। आपने सब्र, इंसाफ़ और हिकमत के साथ इनका मुक़ाबला किया। लेकिन फसाद इस हद तक बढ़ गया कि जंग-ए-जमल और सिफ़्फ़ीन जैसी जंगों का सामना हुआ।

अहले-सुन्नत का यह अक़ीदा है कि आप राह-ए-हक़ पर थे। आपका इज्तिहाद राजिह था, लेकिन दूसरे भी मुज्तहिद थे। हम सब सहाबा को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं।

फ़ितना क्या है?

फ़ितना वह हालत है जिसमें हक़ और बातिल में मिलावट हो जाए, ग़लत चीज़ सही लगने लगे, और लोगों की राय दलील पर भारी पड़ने लगे। ऐसा उस वक़्त होता है जब इंसान जाहिलाना जज़्बात, नफ़्सानी ख़्वाहिशात और शैतानी ख़सलतों के ताबे हो जाता है। फिर वह दुनिया की मुहब्बत में मुब्तिला होकर बातिल का तलबगार बन जाता है, लेकिन ख़ुद को हक़ का दावेदार समझता है।

इसकी पहचान यह है कि वह हक़ या हक़ वालों का मुख़ालिफ़ होगा। अगर खुलेआम न भी हो, तो दिल में या बातिनी तौर पर बुग़्ज़ व हसद रखेगा। जब इंसान इस हद तक पहुँच जाता है, तो वह ख़ुद भी एक फ़ितना का रूप ले लेता है और सुन्नी अवाम या ख़वास को ही टारगेट करता है। अहले सुन्नत को तोड़ना और टुकड़ों में बाँटना अपना मक़सद बना लेता है, बल्कि उसे दीन का काम समझने लगता है, जबकि यह क़ुरआन के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह का हुक्म:

तर्जुमा : **“अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो, सब मिलकर, और आपस में फूट न डालो।”** (सूरह आल-इमरान , आयत नं 103)

72 बातिल फ़िरकों के बनने का बयान

हजरते इब्ने उमर रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल 72 मज़हबो में बट

गए थे और मेरी उम्मत 73 मज़हबो में बट जाएगी उनमें एक मजहब वालों के सिवा बाकी तमाम मज़ाहिब वाले नारी और जहन्नमी होंगे सहाबा ए किराम ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वोह एक मजहब वाले कौन है तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह लोग इसी मज़हबो मिल्लत पर कायम रहेंगे जिस पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं (तिर्मिजी, हदीस नं 171, अबू दाऊद, हदीस नं 4579, इब्ने माजा, सफह 287)

72 (जहन्नमी) फ़िरक़ों के अक़ायदे बातिला

अहले सुन्नत व जमात के अलावा जितने फिर्के हैं उनमें अक्सर के अकाइद कुफ़रिया हैं और कुछ के गुमराही वाले हैं। उन्होंने अल्लाह के महबूब बंदों की शान में तौहीन की, गालियां दी जो सबसे बड़ा जुर्म है। पहला खारिजी फिरका जिसके मानने वाले हज़रते अली रदीअल्लाहु अन्हु को हक पर नहीं मानते हैं और उनकी शान में गुस्ताखियां करते हैं, दुसरा राफजी (शिया) फिरका जो हज़रते अली रदीअल्लाहु अन्हु को बरहक तो मानते हैं मगर आपकी शान में गुलू करते थे और हज़रते अबू बक्र और हज़रते उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हुमा की शान में गुस्ताखियां करते हैं। नज्द से फैलने वाला फ़ितना और उसकी शाखें यानी वहाबी, देब बंदी, जमाते इस्लामी, अहले हदीस, तब्लीगी जमात, क़ादीयानी वगैरह तमाम फ़िरक़ों के बानी और अकाबिर मौलवियों ने हक़ के ख़िलाफ अक़ायद रखकर मुरतद व मुनाफिके एतेकादी बना।

राफ़्ज़ीयत का दौरे फ़ितन

बुस्ताने फकीह अबुल्लैस में मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत है कि आपने फरमाया कि

तरजमा : यानी आखिरी ज़माने में एक फ़िर्का पैदा होगा जो अपने आप को हमारे गरोह की तरफ मन्सूब करेगा हालांकि वह हमारे गरोह से न होगा। उनका एक बद लकब होगा। लोग उन्हें राफ्ज़ी कहेंगे तो जब तुम उन से मिलो उनको कत्ल कर डालना इसलिए कि वह मुर्तद हैं।"

इसी बुस्तान में है कि मौला अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने फरमाया। यानी मेरे बारे में दो गिरोह हलाक होंगे। एक तो मुहब्बत में हद से गुज़र जाने वाला, दूसरा मुझ से हद से ज़्यादा बुग्ज़ रखने वाला। पस मुहब्बत में हद से गुज़रने वाला यही राफ्ज़ी है कि मौला अली को शैखैन पर फ़ज़ीलत देता और आपकी तमाम औलाद के लिए कि सादात हैं उनके कसीर फज़्ल पर एतमाद करके खातमा बिल-खैर का यकीन रखता है।(अबअ सनाबिल शरीफ, पहला संुबुला, पेज 63)

राफ़िज़ीयत (अब्दुल्लाह बिन सबा) का फ़ितना

अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी था, जिसे बाद में "सबाई" कहा जाने लगा। वह अस्ल में यमन (सनआ) का रहने वाला था और बाहर से मुसलमान बनकर अंदर ही अंदर इस्लाम को नुक़सान पहुँचाने लगा।

हज़रत अली के दौर-ए-ख़िलाफ़त में मज़ीद वुसअत इख्तियार कर गया और आप के ज़माने में सबई फ़िरका ज़ाहिर हुआ जो चंद एक सहाबा के सिवा सब को गालियाँ देते थे और उनकी तरफ़ कुफ्र-ओ-निफ़ाक़ को मंसूब करते थे और उन से इज़हार-ए-बीज़ारी करते थे, इसी लिए उन्होंने अपना नाम तबर्रियाह रखा हुआ था। हज़रत अली ﵁ ने इन से बेज़ारी का इज़हार किया। इन लोगों का लीडर अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी था जिस ने मुसलमानों को फरेब देकर बज़ाहिर इस्लाम क़बूल किया हुआ था और वह उम्मत में तफ़रुक़ा पैदा करने के लिए कोशिश करने के लिए धार इख्तियार करने की दावत देता था जैसे कि क़दीम-ओ-जदीद ईसाइयों में से उस के इम्तिसाल ने अदावत पैदा करने और अपनी क़ौम और हुज़ूर और नबी अकरम ﷺ के दरमियान मारक़ा-आराई के लिए यह तर्ज़-ओ-तरीक़ इख्तियार किया हुआ था। हज़रत उमर ने उन के बाक़ी मंदा लोगों को सर-ज़मीन-ए-हिजाज़ से जला-वतन कर दिया था। इस बिदअत के इख्तियार करने में इब्न सबा के दिगर हम-मज़हबों, नसारा, बुत-परस्तों और सबियों ने भी उस की मदद की। उस वक़्त तक शीया का लक़ब, हुब्ब-ए-आल-ए-बैत और अक़ीदा-ए-सुन्नत की अलामत न बना था, शीया मुख़्लिसीन ने इसे ना-पसंदीदगी की निगाह से देखा।

फिर यह मुआमला बढ़ता ही गया और उन में से एक जमाअत हज़रत अली की उलूहियत (ख़ुदा होने) की क़ाइल हो गई और आप को इन लोगों से जंग करनी पड़ी। हज़रत अली के बाद यह मुआमला यहाँ तक बढ़ा कि शीया फ़िरका 24 फ़िरक़ों में तक़सीम हो गया जैसा कि मुख़्तसर अल-तुहफ़ा में है, और अल-अदद ने लिखा है कि यह 22 फ़िरके हैं जो एक दूसरे की तकफ़ीर करते हैं और इन सब फ़िरकों की अस्ल तीन फ़िरके हैं: ग़ुलात, ज़ैदियाह और इमामियाह। फिर ग़ुलात के 8 फ़िरके हैं और ज़ैदियाह के तीन और इमामियाह के बारे में आया है कि वह सहाबा की तकफ़ीर करते हैं। और शैख़ैन से इज़हार-ए-बीज़ारी करते हैं वह ग़ाली राफ़िज़ी हैं।(अल सवाइके मुहर्रिका, 14)

हज़रत अली ﷺ से महब्बत कब मुफीद

हज़रत अली अल-मुर्तज़ा से अक़ीदत व महब्बत तब फ़ायदा देगी, जब हज़रत अली के दोस्तों (सहाबा) से प्यार हो। अगर उनके दोस्तों से बुग़्ज़ व इनाद (दुश्मनी) हो, तो फिर न हज़रत अली ﷺ अल-मुर्तज़ा भी मुँह लगाएँगे और न ही नबी करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यानी मुंह फेर लेंगे।

महब्बते अहले बैयत का लिबादा (बदतरीन लोग)

हज़रत अली फ़रमाते है "यह उम्मत तिहत्तर (73) फ़िरक़ों में तक़सीम हो जाएगी, उनमें बदतरीन वो लोग होंगे जो अहले बैत की महब्बत का दावा करेंगे मगर हमारे आमाल की मुख़ालिफ़त करेंगे।" (हिलयात उल-औलिया, जिल्द 6, किताब अल-फ़ितन)

मौजूदा दौर के फर्जी मुहिब्बे अहले बैयत (मौलायी) का अक़ीदा हज़रत हसन रदीयल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ जी हाँ हज़रत हसन रदीयल्लाहु अन्हु अमीरे मुआविया ﷺ को मोमिन मानते थे तब ही तो आमिरे मुआविया और हज़रत अली के मामला में सुलह कराया और अपनी ख़िलाफ़त अमीरे मुआविया ﷺ को देकर उनकी बैयत की और उम्मत को अम्न बख्सी लेकिन अफ़्सोस आज क़ुर्बे क़यामत फितनो के इस दौर में मुहब्बते अहले बैत का लिबादा ओढ़ने वाले मौलायी गिरोह अमीरे मुआविया ﷺ को मोमिन नहीं

मानते जो हसन रदीयल्लाहु अन्हु के अक़ीदे के ख़िलाफ़ है और इसकी वजह हज़रत अली से हद से ज़्यादा मुहब्बत करना है जो हलाक़त का सबब है।

मुख्तार सक़फ़ी का महब्बते अहले बैत का फ़र्ज़ी दावा

याद रहे अहले बैत से महब्बत हुज़ूर की निस्बत की वज्ह से होना चाहिए और हुज़ूर से महब्बत अल्लाह की रज़ा के लिए होनी चाहिए, यानी अल्लाह तक पहुंचने का ये ज़रिया है, ना कि इस ज़रिए यानी अहले बैत की महब्बत को ही मतलूब, मक्सूद, मअबूद बना लेना है। और असल मकसूद यानी अल्लाह और रसूलुल्लाह की रज़ा हासिल करने के बजाय उसे नाराज़ करना, जैसे कि शिया लोग करते हैं। मुख्तार सक़फ़ी, जो क़ातिलाने इमाम हुसैन को चुन चुन कर मारा था, लेकिन इस अमल के पीछे उसकी नीयत अल्लाह और रसूलुल्लाह की रज़ा हासिल करना नहीं था। अगर होता, तो दावा-ए-नुबूवत नहीं करता और काफिर होकर नहीं मरता। आज भी ऐसे बहुत लोग हैं जो अहले बैत से फर्ज़ी महब्बत के दावेदार हैं और दीन के गद्दार हैं। इस गिरोह में शिया और मौलाई फिरका शामिल हैं। (तालीफ़)

ख्वार्ज़ियत का फ़ितना

ख़वारिज के मुतअल्लिक़ लिखा है कि वह हज़रत अली और उन बारह हज़ार सहाबा की तकफ़ीर करते हैं जिन्होंने तहकीम (जंग-ए-सिफ़्फ़ीन के बाद के हज़रत अली और हज़रत मुआविया के दरमियान झगड़े को सुलझाने के लिए दोनों तरफ से हकम (फ़ैसला करने वाले) मुक़र्रर किए गए थे। इसी को “तहकीम” कहा जाता है।) से रज़ामंदी का इज़हार किया था (यानी हज़रत अली ने से सुलह कर ली), वह नस्ब-ए-इमाम (मुसलमानों के लिए इमाम/ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने) को वाजिब क़रार नहीं देते और हज़रत उस्मान की तकफ़ीर (काफ़िर कहना) करते हैं और अक्सर सहाबा को कबीरा के मुर्तकिब मानते हैं। इन में से एक अबाज़ियाह फ़िरका है जिस से आगे सात फ़िरके बनते हैं। अल-अदद के बयान के मुताबिक़ ज़ैदियाह और इमामियाह में एतिदाल-पसंद हैं, ग़ाली नहीं। इमामियाह में से इतना अशरियाह, जाफ़रियाह भी कहलाता है। आगे फिर यह दो फ़िरक़ों में तक़सीम हो जाते हैं, एक उसूली दूसरे अख़बारी। उसूली सिर्फ उन बातों को क़बूल करते हैं जो उन के आइम्मा के उसूलों के मुताबिक़ हों, और अख़बारी लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़

बातों को भी मानते हैं। ज़ैदियाह, ज़ैद बिन अली बिन अल-हुसैन के पैरोकार हैं जो शैख़ैन से इज़हार-ए-बीज़ारी नहीं करते।

ख़वारिज के तीन फ़िरके हैं जो सब के सब हज़रत अली, हज़रत उस्मान, अस्हाब-उल-जमल और तहकीम पर रज़ामंदी इख्तियार करने वालों की तकफ़ीर करते हैं। वह ज़ालिम इमाम के ख़िलाफ़ बग़ावत को जाइज़ क़रार देते हैं और इस पर कुफ्र का हुक्म लगाते हैं।(अल सवाइके मुहर्रिका, 15)

यह वह तफ़रीक़-ओ-इख्तिलाफ़ है जिस ने आज़ा-ए-उम्मत को काट कर रख दिया है और उन के दरमियान जंगों की आग के शोले मार रही है और बेगुनाहों के खून बहाए जा रहे हैं। अबुल फ़रज इस्फ़हानी और दिगर लोगों ने ऐसे वाक़िआत का ज़िक्र किया है जिन से बदन पर लरज़ा-ख़ेज़ तारी हो जाती है और जिगर फट जाता है। इस ग़ुलू और इसराफ़ की वजह से हर फ़रीक़ ने अपने फ़िरके से बदला लिया है और मुहर्रमात-ए-इलाहियाह को मुबाह क़रार दे दिया है और अहकाम-ए-इलाहियाह से बग़ावत इख्तियार की है जिस से मसाइब-ओ-आलम में इज़ाफ़ा हुआ है। हम अल्लाह त'आला के हुज़ूर दुआ-गो हैं कि वह इन परेशान-ख़ातिर मुन्तशिर अफ़राद को मुज्तमिअ़ कर के उन के दिलों को मज़बूत करे, ख़ाना-नह कि वह अपनी मशीअत को पूरा करने की मुकम्मल क़ुदरत रखता है।

मौलायी फ़ितनें की हक़ीक़त

ज़हालत के दौर में मौलाइयत : मौजूदा दौर 2026 में अहले सुनत व जमाअत के अक़ाइद से हट कर एक फिरका बना जिसे मौलायत कहते है ये लोग अपने आप को सुन्नी कहते है लेकिन शिया फिरके की तरह मौला अली और अहले बैत की मुहब्बत में गुलू करते है और दूसरे सहाबा यानी अमीरे मुआविया ﵁ को हक़ पर नही मानते उन्हें मुनाफ़िक़, बागी, और तरह तरह के गलियों से उनकी तौहीन करते है जो बातिल अक़ाइद है यूं तो जितने भी फिरके बने सब अहले सुन्नत से ही कट के हट के बना।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को बुरा कहने वाला **“मौलाइयी फ़िरका”** दरअसल वह गिरोह है जो शिया / राफ़िज़ी सोच से निकलकर पैदा हुआ,

लेकिन ख़ुद को “अहले सुन्नत” जैसा दिखाने की कोशिश करता है। इस फ़िरके को अक्सर “मौलायी” भी कहा जाता है।

मौलायी गिरोहों ने हज़रत अली की महब्बत के दावे में हद से बढ़कर हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ पर इल्ज़ाम लगाए और उन्हें ग़लत ठहराया, जबकि हज़रत मुआविया सहाबी-ए-रसूल हैं। सहाबा की महब्बत ईमान है और उनसे बुग़्ज़ रखना निफ़ाक़ है।

इसकी पहचान यह बताई जाती है कि ये आला हज़रत के मुख़ालिफ़ हैं और बरेलवियों से शरई इख़्तिलाफ़ रखते हैं। हिन्दुस्तान में अक्सर मौलायियत चिश्ती ख़ानक़ाहों से फैल रही है, जो मस्लक-ए-आला हज़रत पर क़ायम न रहने का अंजाम है।

मस्लक-ए-आला हज़रत पर क़ायम रहो,
ज़िन्दगी दी गई है इसी के लिए।

फ़ितनों से ईमान पर असर

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु त'आला अन्हु, नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

“यक़ीनन क़ियामत से पहले अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह बहुत से फ़ितने होंगे। उनमें आदमी सुबह को मोमिन रहेगा और शाम को काफ़िर हो जाएगा, और शाम को मोमिन रहेगा और सुबह को काफ़िर हो जाएगा।”(मिशकात जिल्द 2 सफ़हा 424)

फितनों के दौर में क्या करें

हदीस: हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफा बिन यमान फरमाते हैं: जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम ने अपने बा'द इस्तिलाफ और फिरकों की खबर दी तो मैं ने अर्ज़ की: "यारसूलल्लाह अगर मैं वोह जमाना पाऊं तो आप मुझे क्या नसीहत फरमाते हैं ?" तो आपने इरशाद फरमाया: "कुरआने पाक की तालीम हासिल करो और उस के मज़ामीन पर अमल करो कि इस से निकलने का यही रास्ता है।" हज़रते सय्यदुना हुज़ैफा फरमाते हैं: मैं ने तीन मर्तबा यही सुवाल किया तो आपने तीनों बार यही जवाब इरशाद फ़रमाया कि "कुरआने पाक की तालीम हासिल करो और इस के मजामीन पर अमल करो कि इसी में नजात है। (अबु दाऊद)

बाब 2

इस बाब में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की हयात, सीरत, अहवाल, फ़ज़ाइल, ख़ासाइल का बयान है ताकि उसके मुताल्लिक गलतफहमियों से निज़ात हासिल हो जाये और हमारे दिल मे उसके लिए मोहब्बत पैदा हो।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ का मक़ाम और अदब

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ उन ख़ुश-नसीब सहाबा-ए-किराम में से हैं जिन्हें बारगाह-ए-रिसालत मुहम्मद ﷺ की सोहबत हासिल हुई। आप वही लिखने वालों (कातिब-ए-वही) में भी शामिल थे। सहाबी होना अपने आप में बहुत बड़ा फ़ज़्ल और शरफ़ है, क्योंकि क़ुरआन ने सहाबा-ए-किराम की तारीफ़ बयान की और हुज़ूर ﷺ ने उनके मक़ाम को बुलंद फ़रमाया।

अहले सुन्नत वल जमाअत का अकीदा यह है कि तमाम सहाबा-ए-किराम अदब, मोहब्बत और ख़ैर के साथ याद किए जाएँ। अगर सहाबा के दरमियान किसी मसले में इख़्तिलाफ़ हुआ, तो उस पर ज़बान दराज़ी करने के बजाय ख़ामोशी, अदब और एहतियात का रास्ता अपनाया जाए।

हज़रत मुआविया ने इस्लाम की बड़ी ख़िदमात अंजाम दीं। आपके दौर में इस्लामी हुकूमत मज़बूत हुई, बहरी बेड़े (नौसेना) की बुनियाद पड़ी और कई इलाक़ों में इस्लाम पहुँचा। आप सियासत, इंतिज़ाम और हिकमत में भी मशहूर थे।

अहले सुन्नत का तरीका यह है कि हज़रत अली और हज़रत मुआविया दोनों का अदब किया जाए, क्योंकि दोनों इस उम्मत की बड़ी हस्तियाँ हैं। सहाबा-ए-किराम के बारे में दिल में बुग़्ज़ रखना या उनकी तौहीन करना ईमान के लिए ख़तरनाक अमल है।

हमें चाहिए कि हम सहाबा-ए-किराम की मोहब्बत को अपने ईमान का हिस्सा समझें और फ़ितनों से बचते हुए अहले सुन्नत के अक़ीदे पर क़ायम रहें।

हजरत अमीरे मुआ़विया ﵁ (मुख्तसर तआरुफ़)

हजरत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु अन्हु की हस्ती काबिले जिक्र है। आप सरदारे मक्का अबू सुफ्यान रदियल्लाहु त'आला अन्हु के फरज़न्द है। आपकी वालिदा माजिदा का नाम" हिन्दा" था। 8 हिजरी फतेह मक्का के साल आप ने इस्लाम कबूल किया और दरबारे रिसालत में इतने मुस्तमद सहाबी करार पाये कि हुजूर ﷺ ने " कातिबे वही" का ओहदा उनको अता फरमाया। खिलाफते राशिदा के दौर में शाम के गवर्नर रहे फिर तमाम आलमे इस्लाम के बादशाह हो गये। रजब 60 हिजरी 78 बरस की उम्र पाकर वफात पायी। आपसे 136 हदीसें मरवी हैं। (फुयूज़ुल बारी, जिल्द, 1 सफा 226)

हज़रत मुआविया का दौर

हज़रत मुआविया इब्न अबी सुफ़यान ﵁ इस्लाम के वह जलीलुल क़द्र सहाबी हैं जिनकी शख़्सियत को अक्सर ग़लत अन्दाज़ में पेश किया गया है। मगर हक़ीक़त यह है कि आप न सिर्फ़ रसूलुल्लाह ﷺ के करीबी और भरोसेमंद सहाबी थे, बल्कि इस्लाम की तवारीख़ में एक कामयाब और दाना हाकिम भी साबित हुए।

इस्लाम क़बूल करना हज़रत मुआविया ﵁ ने सुलह-ए-हुदैबिया के बाद इस्लाम कबूल किया और फ़त्ह-ए-मक्का से क़ब्ल आपके इस्लाम लाने की तस्दीक़ होती है। रसूलुल्लाह ﷺ ने आपको न सिर्फ़ मुसलमानों की जमाअत में शुमार किया बल्कि आप पर एतमाद करते हुए अहम् ओहदे भी सौंपे।

कातिब-ए-वही और क़रीबी सहाबी हज़रत मुआविया ﵁ को रसूलुल्लाह ﷺ ने वही (क़ुरआन) लिखने वालों में शुमार किया। यह अपने आप में एक बड़ा इत्तमिनान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने आप पर इतना भरोसा किया कि अल्लाह की किताब की लिखावट की ज़िम्मेदारी भी सौंपी।

एक और रिवायत में है:

"ऐ अल्लाह! उसे किताब (क़ुरआन) और हिसाब सिखा और उसे अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा।" – (मुसनद अहमद)

इन्तिज़ामी सलाहियत और अम्न हज़रत मुआविया ﵁ ने अपने दौर में एक मज़बूत, मुंतज़म और पुरअम्न हुकूमत क़ायम की। आपने सालों तक शाम (सीरिया) का अमीर होकर न सिर्फ़ फ़ितनों से उम्मत को बचाया बल्कि दुश्मनों के मुकाबले में इस्लाम की सरहदों को महफ़ूज़ रखा।

आपका दौर फतह, नज़्म-ओ-ज़बत और अम्न के एतिबार से नुमायां रहा। जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﵁ फरमाते हैं:

“हमने मुआविया के साथ नमाज़ पढ़ी और हज किया, और हमने उन्हें इमाम के तौर पर पसंद किया।”

सहाबा का ऐतिराफ़ और मोहब्बत हज़रत मुआविया ﵁ को बड़े-बड़े सहाबा ने भी इज़्ज़त दी और उनसे इख़्तिलाफ़ के बावजूद उन्हें मुसलमानों का क़ाबिल इमाम और अमीर तस्लीम किया। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास ﵁ और सैय्यिदा आयशा ﵂ जैसे जलीलुल क़द्र अफ़राद ने आपके साथ मुआमलात किए।

अहल-ए-सुन्नत का मवक़्फ़ हज़रत मुआविया ﵁ एक मुज्तहिद सहाबी थे। उनका इख़्तिलाफ़ हज़रत अली ﵁ से उस्मान ﵁ के क़त्ल के सिलसिले में था। उन्होंने कभी खिलाफत का दावा नहीं किया जब तक मामला साफ़ नहीं हुआ। उनके इख़्तिलाफ़ की बुनियाद शख्सियत नहीं बल्कि उसूल था।

इंशा'अल्लाह अगले बाब में हम सिफ्फ़ीन की जंग का तफसीली जायज़ा लेंगे कि वह जंग क्यों हुई, दोनों जमाअतों की नीयत क्या थी और उम्मत को इस से क्या सबक मिलते हैं।

हज़रत अमीरे मुआ़विया ﵁ की विलादत

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की पैदाइश की सरीह रिवायत देखने में नहीं आई मगर हिसाब से पता लगता है कि आप की पैदाइश हुज़ूर ﷺ के ज़ुहूर-ए-नुबुव्वत से आठ साल पहले मक्का में हुई। क्योंकि आप की वफ़ात 60 हिजरी में हुई और उस वक़्त आप की उम्र 78 साल थी और हुज़ूर की हिजरत नुबुव्वत के 13 साल बाद हुई और 10 हिजरी में सरकार ﷺ की वफ़ात शरीफ़

है। इस हिसाब से हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की पैदाइश नुबुव्वत के ज़ुहूर से 8 साल पहले होनी चाहिए।

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ का इस्लाम लाना

सहीह यह है कि हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ सुल्ह-ए-हुदैबिया के दिन 7 हिजरी में इस्लाम लाए मगर मक्का वालों के ख़ौफ़ से अपना इस्लाम छुपाए रहे, फिर फ़त्ह-ए-मक्का के दिन अपना इस्लाम ज़ाहिर फ़रमाया। जिन लोगों ने कहा है कि वो फ़त्ह-ए-मक्का के दिन ईमान लाए, वो ज़ुहूर-ए-ईमान के लिहाज़ से कहा। जैसे हज़रत अब्बास रदिअल्लाहु अन्हु दरपर्दा जंग-ए-बद्र के दिन ही ईमान ला चुके थे मगर एहतियातन अपना ईमान छुपाए रहे और फ़त्ह-ए-मक्का में ज़ाहिर फ़रमाया तो लोगों ने उन्हें भी फ़त्ह-ए-मक्का के मोमिनों में शुमार कर दिया, हालाँकि आप क़दीमुल-इस्लाम थे। बल्कि बद्र में भी कुफ़्फ़ार-ए-मक्का के साथ मजबूरन तशरीफ़ लाए थे, इस लिए नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमा दिया था कि कोई मुसलमान अब्बासी को क़त्ल न करे, वो मजबूरन लाए गए हैं।

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के हुदैबिया में ईमान लाने की दलील वो हदीस है जो इमाम अहमद ने इमाम बाक़िर बिन इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन इमाम हुसैन रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाया कि इमाम बाक़िर से अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फ़रमाया कि उनसे हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ रदिअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर के एहराम से फ़ारिग़ होते वक़्त हुज़ूर के मरवा पर बाल काटे। और वो हदीस भी दलील है जो बुख़ारी शरीफ़ ने...रुपया अता फ़रमाया कि हज़रत अब्बास, उठा भी न सके। इस अतिया ख़ुसरावाना से यह लाज़िम नहीं आता कि हज़रत अब्बास छे मुअल्लफ़तुल क़ुलूब में दाख़िल हों। ग़रज़ कि अताया नबविय्या और हैं और तालीफ़े क़ल्ब कुछ और चीज़। हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ को यह अतिया पहली क़िस्म से है। हाँ यह हो सकता है कि हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ को यह अतिया हज़रत अबू सूफियान की ज़ियादती तालीफ़े क़ल्ब का बाइस बन गया हो, जैसे कि हुज़ूर ﷺ ने फ़त्ह मक्का के दिन एलान फ़रमा दिया था कि जो अबू सूफियान के घर में पनाह ले उसे अमान है, गोया अबू सूफियान का घर दारुल-अमान

बना दिया। क्यों? हज़रत अबू सूफियान के तालीफ़े क़ल्ब के लिए। (अज़ त्तहरीर अल-जीनान)

हज़रत अमीरे मुआ़विया ﷺ हाकिम कैसे बने?

आप के दमिश्क का हाकिम बनने का वाक़िआ यह हुआ कि अबू बकर सिद्दीक़ रदिअल्लाहु अन्हु ने मुल्के शाम पर लश्करकशी की तो शाम का हाकिम हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के भाई यज़ीद बिन अबू सूफियान को मुक़र्रर फ़रमाया। इत्तिफ़ाक़न हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ अपने भाई के साथ शाम गए। जब यज़ीद बिन अबू सूफ़ीयान की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ को अपनी जगह हाकिम मुक़र्रर कर दिया। यह तकर्रुर अह्दे फ़ारूक़ में हुआ। उमर फ़ारूक़ रदिअल्लाहु अन्हु ने इस तकर्रुर को जाइज़ रखा। चुनाँचा हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ में और पूरे अह्दे उस्मानी में इस गवर्नरी के ओहदे पर बीस साल तक फ़ायिज़ रहे।

फिर अह्दे अली मुर्तज़ा में अली मुर्तज़ा रदिअल्लाहु अन्हु से ख़ून-ए-उस्मान के बदला का मुतालिबा किया और अर्ज़ किया कि सब से पहले उनके ख़ून का बदला लिया जाए। आख़िर नौबत यहाँ तक पहुँची कि हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने हज़रत अली मुर्तज़ा से बग़ावत कर दी और शाम के मुस्तक़िल हज़रत अमीर बन गए।

फिर इमाम हसन रदिअल्लाहु अन्हु ने छह माह ख़िलाफ़त फ़रमा कर हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी फ़रमाई और हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ तमाम ममलिकते इस्लामिया के हज़रत अमीर हो गए।

ग़रज़ कि आप अह्दे फ़ारूक़-ओ-उस्मानी में 20 साल तक हाकिम रहे और बाद में 20 साल तक हज़रत अमीर, कुल मिला कर 40 साल हुकूमत की। इसका कुछ ज़िक्र दूसरे बाब में आएगा।

हज़रत अमीरे मुआ़विया ﷺ की वफ़ात

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की वफ़ात 4 रजब 20 हिजरी में मक़ाम दमिश्क में लकवे की बीमारी से हुई। उस वक़्त आप की उम्र 78 साल थी। कुछ

मोअर्रेख़ीन ने 80, कुछ ने 88, कुछ ने 86 बरस भी लिखी है मगर क़ौल अव्वल ज़्यादा क़वी है। इकमाल फी अस्मा-उर-रिज़ाल मुसन्निफ़ साहिब-ए-मिशक़ात में जो आप की उम्र 48 साल लिखी है, वह कातिब की ग़लती है कि कातिब बजाए समान-ओ-सब्ऊन के समान-ओ-अरबऊन लिख गया है या इस से हुकूमत की मुद्दत मुराद है। वल्लाहु आलम।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ मर्ज़-ए-वफ़ात में बार-बार कहते थे कि काश मैं क़ुरैश का मामूली इंसान होता जो ज़ी तुवा गाँव में रहता और इन झगड़ों में न पड़ता जिनमें पड़ गया। और ब-वक़्त-ए-वफ़ात वसिय्यत फ़रमाई कि मेरे पास नबी करीम ﷺ के कुछ नाख़ुन शरीफ़ हैं, वह बाद ग़ुस्ल कफ़न के अंदर मेरी आँखों में रख दिए जाएँ, और कुछ बाल मुबारक और हुज़ूर का तहबंद, हुज़ूर की चादर और क़मीस शरीफ़ है। मुझे हुज़ूर की क़मीस में कफ़न देना, हुज़ूर की चादर लपेटना, हुज़ूर का तहबंद मुझे बाँध देना और मेरी नाक कान वग़ैरह पर हुज़ूर के बाल शरीफ़ रख देना। फिर मुझे अरहमुर्राहिमीन के सुपुर्द कर देना।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की लियाक़त व क़ाबिलियत

1. हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ निहायत दयानतदार, सख़ी, सियासतदान, क़ाबिल हुक्मरान, वजीह सहाबी थे। आप ने अहद-ए-फ़ारूक़ी और अहद-ए-उस्मानी में निहायत क़ाबिलियत से हुक्मरानी की। आप की हुकूमत में निहायत आसानी से मालिया वसूल हो जाता था जो मदीना मुनव्वरा पहुँचा दिया जाता था। उमर फ़ारूक़ और उस्मान ग़नी आप से निहायत खुश रहे। उमर फ़ारूक़ निहायत मुहतात और हुक्काम पर सख़्तगीर थे। ज़रा से क़ुसूर पर हुक्काम को मआज़ूल फ़रमा देते थे, मामूली सी गिरिफ़्त पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद जैसे जर्नैल को मआज़ूल फ़रमा दिया, मगर इसके बावजूद हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को...बरक़रार रखा जिस से मालूम हुआ कि आप से इतनी दराज़ मुद्दत हुकूमत में कोई लग़ज़िश सरज़द ना हुई।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के फ़ज़ाइल

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के फ़ज़ाइल दो तरह के हैं। एक उमूमी दूसरे ख़ुसूसी। उमूमी फ़ज़ाइल ये हैं कि वो जलील निशान अज़ीम-उर-मर्तबत सहाबी

रसूल हैं, लिहाज़ा सहाबा के जिस क़दर फ़ज़ाइल व दर्ज़ात अल्लाह त'आला ने कुरआन-ए-करीम में बयान फ़रमाए उन सब में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ दाख़िल हैं। रब ने फ़रमाया कि अल्लाह त'आला कुल सहाबा से जन्नत का वादा फ़रमा चुका। उनके लिए तक़वा तहारत लाज़िम फ़रमा दी, वो सब सच्चे हैं। अल्लाह उनसे राज़ी हो चुका और वो अल्लाह से राज़ी हो चुके। वो बड़े कामयाब हैं, उनसे जलने वाले इनआद रखने वाले कुफ़्फ़ार हैं वग़ैरा वग़ैरा। जिनकी आयात मुक़द्दमा में गुज़र चुकी उन सब में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ यक़ीनन दाख़िल हैं।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ नबी करीम ﷺ के नसबी अज़ीज़ और ससुराली क़राबतदार हैं लिहाज़ा जो आयात हुज़ूर के अहल-ए-क़राबत के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुईं उन सब में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ शामिल हैं। और हुज़ूर ﷺ ने जिस क़दर मर्तब व दर्ज़ात सहाबा कराम या अपने अहल-ए-क़राबत के बयान फ़रमाए उन सब में भी हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ शामिल हैं।

फ़रमाया: मेरे सारे सहाबा तारे हैं, तुम जिस की पैरावी करोगे हिदायत पा जाओगे।

मेरे सहाबा का सवा सेर जौ ख़ैरात करना तुम्हारे पहाड़ भर सोना ख़ैरात करने से अफ़ज़ल है।

मेरे सहाबा से जिस ने बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उन से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की वग़ैरा वग़ैरा।

ये अहादीस भी मुक़द्दमा में गुज़र चुकी, उन सब में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ शामिल हैं। अगर हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के और कोई ख़ुसूसी फ़ज़ाइल हदीस व क़ुरआन में नहीं वारिद हुए, वो भी अज़मत वाले और वाजिब-ए-एहतेराम हैं। उन पर हमारा ईमान है कि ख़ुद नुबुव्वत अज़ीम-उश-शान दर्जा है। ऐसे ही सहाबा के मुताअल्लिक़ अक़ीदा रखना चाहिए।

ज़रूरत नोट

पैग़ंबर की क़राबतदारी मोमिन के लिए दरजात का बाइस है, लिहाज़ा अबू लहब, अबू जहल वगैरा इससे अलग हैं कि अगरचे ये हुज़ूर ﷺ के नसब से

ताल्लुक रखते हैं मगर काफ़िर हैं, जैसे क़िन'अन नूह अलहिसल्लम का बेटा होने के बावजूद हलाक़ हो गया। हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ मोमिन, 'आदिल, साक़िहा सहाबी हैं, लिहाज़ा उनके लिए हुज़ूर की क़राबत बड़े दरजात का बाइस है।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के ख़ुसूसी फ़ज़ाइल

सहाबियत और क़राबत-ए-रसूल अल्लाह ﷺ के इलावा हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ में बेशुमार ख़ुसूसी फ़ज़ाइल हैं जिन में से कुछ अर्ज़ किए जा रहे हैं।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ कातिब-ए-वही

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को नबी करीम ﷺ के कातिब-ए-वही भी और कातिब -ए-खुतूत भी थे, यानी जो नाम और पैयाम सलातीन वगैरा से हुज़ूर फरमाते थे, वह हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ से लिखवाते थे। चुनांचा मुस्लिम शरीफ वगैरा में है कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ हुज़ूर के सामने लिखा करते थे। अबू नईम ने फ़रमाया कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ हुज़ूर ﷺ के कातिबीन में से थे, निहायत खुश्ख़त, फ़सीह, बलीघ, हिल्म और वक़ार वाले। (हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ पर एक नज़र)

हज़रत अमीर अज़ीमुल मर्तबा सहाबी ए रसूल

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ मुज्तहिदीन साहाबा में से हैं और 'आलिम ख़ास तौर पर मुज्तहिद सहाबी बड़े अशरफ़ व आला माने जाते हैं। चुनंचा इमाम बुख़ारी ने इब्न अबी मलिका से रिवायत की कि सैय्यदुना अब्दुल्लाह इब्न अब्बास से कहा गया कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को क्या हो गया कि वह एक रक़अत ही वित्र पढ़ते हैं। आपने फ़रमाया वह ठीक करते हैं, वह फक़ीह हैं, यानी मुज्तहिद। इसी बुख़ारी में दूसरी रिवायत में है कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने एक रक़अत वित्र पढ़ी, उस वक़्त हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के पास अब्दुल्लाह इब्न अब्बास के एक गुलाम हाज़िर थे, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास से यह शिकायत की तो आपने फ़रमाया कि मुआविया

को कुछ न कहो, वह अज़ीमुल मर्तबा सहाबी रसूल हैं। (हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ पर एक नज़र) 40

अमीरे मुआविया ﷺ हादी और महदी

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के फज़ाइल में बहुत सी अहादीस शरीफ़ वारद हैं। इमाम अहमद इब्न हंबल ने अपने मुस्नद शरीफ़ में अर्बद इब्न सारिया से रिवायत की कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: "ख़ुदाया, मुआविया को किताब (क़ुरआन) और हिसाब का इल्म अता फ़रमा और उन्हें अज़ाब से बचा।"

तिरमिज़ी शरीफ़ में अब्दुल रहमान इब्न अबी उमैराह मदनी ने रिवायत की कि फ़रमाया नबी करीम ﷺ ने: "ऐ अल्लाह, मुआविया को हिदायत याफ़्ता और हिदायत देने वाला बना (हादी, महदी) और मुआविया के जरिए लोगों को हिदायत दे।" तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस हसन है।(हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ पर एक नज़र)

अल्लाह और रसूल भी मुआविया ﷺ के मुहिब

हाफ़िज़ इमाम बैतामी ने अब्दुल्लाह इब्न अब्बास से रिवायत की कि एक बार जिब्रईल आमीन हुज़ूर ﷺ अपनी ज़ौजह-ए-मुता'ह्हिराह उम्मे हबीबा रदीअल्लाहु अन्ह के पास तशरीफ़ ले गए तो मुलाहिज़ा फ़रमाया कि आप मुआविया का सर अपनी गोद में लिए बैठी हैं और उनको बार-बार चूम रही हैं। तो सरकार ने फ़रमाया: "ऐ उम्मे हबीबा, क्या तुम मुआविया से महब्बत करती हो?" उन्होंने अज़र किया: "क्यों न महब्बत करूँ कि यह मेरा भाई है।" हुज़ूर ने फ़रमाया: "अल्लाह और रसूल भी मुआविया से महब्बत करते हैं।" (ततहिर-उल-जिनान)

मुआविया बड़े मनाक़िब और बड़े खूबीयों वाले

तमाम 'उलमा-ए-मुहद्दिसीन और साहाबा ने हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की शान व सिफ़ात बयान फ़रमाई। चुनांचे इमाम क़स्तलानी ने शरह बुख़ारी में फ़र्माया कि मुआविया बड़े मनाक़िब और बड़े खूबीयों वाले हैं। शरह मुस्लिम में है कि हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ अदल फ़ज़ल और बेहतरीन साहाबा में से

हैं। इमाम याफ़ई ने फ़र्माया कि मुआविया हलीम, करीम, 'आक़िल क़ामील, बहुत राय सलीम वाले थे। गोया उन्हें क़ुदरत ने मुल्कदारी और हुकूमत के लिए पैदा फ़रमाया था। तमाम मुहद्दिसीन उनके नाम के साथ रदीअल्लाहु अन्हु लिखते रहे।

हज़रत उमर ने अमीरे मुआविया की बहुत मौके पर तारीफ़ें फ़रमाई। उन्हें दमिश्क का हाकिम मुकर्रर किया और कभी मज़ूर न फ़रमाया। अगर आप थोड़ी सी लग्जिश भी मुलाहिज़ा फ़रमाते तो फ़ौरन मआज़ूल फ़रमा देते, जैसे कि मामूली शिकायत पर सआद इब्न अबी वक़ास या खालिद इब्न वलिद जैसी बड़े हस्ती को मआज़ूल फ़रमा दिया। इसी तरह उस्मान ने अपने पूरे ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में अमीरे मुआविया को हुकूमत के ओहदे पर बहाल रखा। यह उन बड़े साहबाओं की तरफ़ से अमिर मुआविया की इंतिहाई अजमत व अमानत का इकरार और ऐलान है।

हज़रत अली ने बहुत से मौके पर अमिर मुआविया की तारीफ़ फ़रमाई। चुनिंदा तबरानी ने पसंद सही हदीस फ़रमाई कि किसी ने अली करम अल्लाह वज्हह अल करीम से जंग-ए-सिफ़िन के ज़माना में अमीरे मुआविया रदीअल्लाहु अन्हु के मुतालिक दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया: "तशलुना व कुतिला मुआविया फ़ि अल-जन्ना," हमारे और मुआविया के मक़्तूलीं सब जन्नती हैं। फिर सैय्यदना अली ने अमीरे मुआविया के मुतालिक इर्शाद फ़रमाया: "इख़वाना बघू 'अलैना," ये लोग हमारे भाई हैं, हम बग़ावत कर बैठे, रदीअल्लाहु अन्हुमा अज्मईन।

इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में अब्दुल्ला इब्न अब्बास ﵁ से हदीस फ़रमाई कि आपने फ़रमाया: "मैंने मुआविया से बेहतर कोई हुकूमत के लायक न देखा।" हज़रत उमर ﵁ जब शाम में दाख़िल हुए और अमीरे मुआविया की शान और शौकत और बड़ा जुर्रार लश्कर देखा तो फ़रमाया: "मुआविया ﵁ अरब के किस्र हैं।" (तत्हीरुल जनान)

इमाम आमश जो जवाजिला ताबेईन में से हैंफ़रमाते हैं – कि अगर तुम अमीरे मुआविया ﵁ को देखते, तो कहते कि यही तो इमाम महदी हैं।"(तत्हीरुल जनान)

इमाम हसन ﷺ ने जब खिलाफ़त फ़रमाई, तो अमीरे मुआविया के हक़ में खिलाफ़त से दस्तबरदारी फ़रमाई और उनका सालाना वज़ीफ़ा व नज़राना क़बूल फ़रमाया। अगर अमीरे मुआविया में मामूली फ़िस्क भी होता तो इमाम हसन सर दे देते मगर उनके हाथ में हाथ न देते। नबी करीम ﷺ ने भी इमाम हसन ﷺ के इस अफ'अल-ए-शरीफ़ की तारीफ़ फ़रमाई थी कि मेरा यह बेटा सय्यिद है। अल्लाह त'आला इसके ज़रिए मुसलमानों की दो बड़ी जमातों में सुलह फ़रमाएगा।

इमाम हुसैन ﷺ इस सुलह के वक़्त 'आक़िल, बालिग़, समझदार थे मगर उन सरकार ने भी इस सुलह पर ऐतराज़ न फ़रमाया कि इसमें खुद भी दाख़िल हो गए। अगर अमीरे मुआविया इमाम हुसैन ﷺ की नज़र में कुछ 'अयब रखते होते तो यज़ीद मरदूद की तरह आप उस वक़्त अमीरे मुआविया के मुकाबले में आ जाते। मालूम होता है कि नज़र इमाम हुसैन ﷺ में यज़ीद फ़ासिक, फ़ाज़िर, ज़ालिम वगैरा था। अमिर मुआविया 'आदिल, थीक़ाह, मुत्तकी, बेअत-ए-उमरत थे। अब किसी को क्या हक़ है कि उन पर ज़ुबान त'न दराज़ करे।

अमीरे मुआविया ﷺ फ़ासिक नहीं

अमीरे मुआविया ﷺ को यह शरफ़ हासिल है कि आप ने बड़े जलील-उल-क़दर साहबा से रिवायत की जो तमाम मुहद्दिसीन ने कबूल की और अपनी किताबों में लिखी और बड़े बड़े साहबा कराम ने अमीरे मुआविया से रिवायत ली और अहादीस नक़्द या नक़ल की। ख़्याल रहे कि फ़ासिक की रिवायत ज़इफ़ होती है, यानी क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं होती।

अमीरे मुआविया ने अबू बकर सिद्दीक, उमर फ़ारूक, उम्म-ए-हबीबा वग़ैरहम से अहादीस नक़ल की और अब्दुल्ला इब्न अब्बास, अब्दुल्ला इब्न उमर, अब्दुल्ला इब्न जुबैर, जरिर इब्न अब्दुल्ला, बकल्ली अल्लाह, मुआविया इब्न ख़दीज, दी साईब इब्न यज़ीद, नूमान इब्न बशीर, अबू सईद ख़ुदरी व अबू लाहब इब्न सुहैल वगैरा जैसे बुज़ुर्ग व फ़क़ीह व मुज्तहिदीन साहबा ने अमीरे मुआविया ﷺ से अहादीस रिवायत की। इसी तरह अमीरे मुआविया जुबैर, अबू और लिस खुलानी, सईद इब्न मुसैय्यब, खालिद इब्न माहदान, अबू सलीह,

समान हमाम इब्न उकबा, अब्दुल्लाह इब्न हारिस, क़ैस इब्न अबी हाजिम जैसे जलील-उल-क़दर ताबिईन, उलमा और फ़ुक़हा ने रिवायत-ए-हदीस ली और क़बूल की। अगर हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदीअल्लाहु अन्हु में फ़िस्क़ या ज़ुल्म वग़ैरह का ज़रा सा भी शाइबा होता, तो ये हज़रात उनसे रिवायत-ए-हदीस हरगिज़ न करते।

हज़रत अमीरे मुआ़विया ﵁ क़ाबिल-ए-रिवायत

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदीअल्लाहु अन्हु की (163) हदीसें हैं जिनमें चार वो हैं जिन्हें मुस्लिम और बुख़ारी दोनों ने रिवायत फ़रमाई और चार सिर्फ़ बुख़ारी ने और पाँच सिर्फ़ मुस्लिम ने। बाकी अहमद, अबू दाऊद, नसाई, बैहकी, तबरानी, तिरमिज़ी, मालिक वगैरा मुहद्दिसीन ने रिवायत फ़रमाई। अगर हम को इस रिसाला के तवील हो जाने का अंदेशा न होता तो हम वो तमाम रिवायतें यहाँ नक़ल कर देते। शालक़ीन किताब-ए-हदीस का मुताल्ला करें। ख्याल करना चाहिए कि इमाम बुख़ारी और मुस्लिम वो बुज़ुर्ग हस्तियाँ हैं जो ज़रा से शक़-ए-फ़िस्क़ की बिना पर रिवायत नहीं लेते। उन बुज़ुर्गों का हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की रिवायत क़बूल फ़रमा लेना बाएलान बता रहा है कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ उनकी निगाह में मुत्तक़ी, 'आदिल, थीक़ाह, क़ाबिल-ए-रिवायत हैं। मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को तमाम मोमिनों का मामून फ़रमाया, उनके बड़े कारनामे मसनवी में बयान किए।

हज़रत अमीरे मुआ़विया ﵁ सुल्तान-ए-इस्लाम

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ये इस्लाम के पहले शानदार सुल्तान हैं जैसे अबू बक्र सिद्दीक़ इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा हैं, इस लिए कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया था कि मेरे बाद खिलाफत-ए-राशिदा (यानी नुबुव्वत (पैग़म्बरी) के तरीके पर कायम खिलाफ़त) तीस साल तक रहेगी फिर सल्तनत होगी। अमीरुलमोमिनीन अली मुर्तज़ा रदियल्लाहु अन्हु की शहादत के वक़्त इस मुद्दत में करीबन सात मह बाक़ी थे। चुनांचा यही बाक़िया मुद्दत इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हु ने पूरी फरमा कर खिलाफत से दस्त-बरदारी

फरमा ली क्योंकि मुद्दत-ए-खिलाफत पूरी हो चुकी थी। उस वक़्त से हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ सुल्तान-ए-इस्लाम मुक़र्रर हुए।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की बेमिस्ल सख़ावत

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ निहायत नेक दिल, सख़ी, बहुत हलीम ओ करीम थे जैसा कि उनके मुतअल्लिक़ नबी करीम ﷺ ने ख़बर दी थी। चुनाँचा आप की सख़ावत हसब-ए-ज़ैल वाक़ियात से ज़ाहिर होती है।

I : मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात शर्ह मिश्क़ात में फ़रमाया कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने इमाम हसन को चार लाख रुपय नज़राना पेश किया जो इमाम हसन रदीअल्लाहु अन्हु ने क़ुबूल फ़रमाया। (किताब-उन-नाहियह)

ii: हाकिम ने ब रिवायत हिशाम बिन मुहम्मद रिवायत की कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने इमाम हसन के लिये एक लाख रुपय सालाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया था। इत्तिफ़ाक़न एक साल ये वज़ीफ़ा इमाम हसन को न पहुँचा। आप ने चाहा कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को याद-दहानी के लिये ख़त लिखें, नबी ﷺ ने ख़्वाब में इमाम हसन को फ़रमाया कि अपनी जै रब से अर्ज़ करो और फ़रमाया ये दुआ पढ़ो:

اللَّهُمَّ اقْذِفْ فِي قَلْبِي رِجَاءَكَ وَاقْطَعْ رِجَاءِ عَنَن سِوَاكَ حَتَّى لَا أَرْجُوا أَحَدًا غَيْرَكَ اللَّهُمَّ وَمَا ضَعُفَتْ عَنْهُ قُوَّتِي وَقَصَرَ عَنْهُ عَمَلِي وَكَمْ تَنْتَهِ إِلَيْهِ رَغْبَتِي وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْأَلَتِي وَلَمْ يَجْرِ عَلَى لِسَانِي مِمَّا أَعْطَيْتُ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ مِنَ الْيَقِينِ فَخَصِينَى بِهِ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ.

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मेरे दिल में अपनी उम्मीद भर दे और अपने मा सिवा से उम्मीद मुन्क़तअ ' फ़रमा दे यहाँ तक कि तेरे सिवा किसी से उम्मीद न रखूँ। ऐ अल्लाह जिस चीज़ से मेरी ताक़त कमज़ोर है और मेरे अमल कोताह हैं और मेरी रग़बत वहाँ तक न पहुँची और मेरी ज़ुबान पर जारी न हुआ जो कि तू ने अगलों और पिछलों को यक़ीन अता फ़रमाया है पस मुझे उस से ख़ास कर ऐ जहाँनों के पालने वाले।

चुनाँचे ये वज़ीफ़ा इमाम हसन रदीअल्लाहु अन्हु ने शुरू कर दिया। अभी एक हफ़्ता न गुज़रा था कि हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने पन्द्रह लाख रुपये भेज दिया, यानी दो लाख वज़ीफ़ा और तेरह लाख नज़राना (नाहिया वग़ैरह)।

मुसलमान ये दुआ याद कर लें, हाजत के लिये बेहतरीन दुआ है।

iii: एक बार हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने हाज़िरीन से फ़रमाया कि जो कोई अली ﷺ की शान में क़सीदा पढ़े तो मैं उसे फ़ी शेर एक हज़ार दीनार दूँगा। चुनाँचे हाज़िरीन शुआरा ने अश्आर पढ़े और इनाम लिया। हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ हर शेर पर कहते थे कि अली ﷺ इस से भी अफ़ज़ल हैं। उमर व इब्ने आस शायर ने एक क़सीदा अली मुर्तज़ा की शान में पढ़ा जिसका एक शेर ये था:

هُوَ النَّبَاءُ الْعَظِيمُ وَفُلْكَ نُوحٍ وَبَابُ اللّٰهِ وَانْقَطَعَ الْخِطَابُ

हज़रत अली बड़ी ख़बर वाले हैं। नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती हैं। अल्लाह का दरवाज़ा हैं। उनके बग़ैर अल्लाह से कोई कलाम नहीं कर सकता। हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने इस शेर पर उस शायर को सात हज़ार दीनार दिए। (नक़ा'इस अल-फुनून मुसन्निफ़ा मुहम्मद इब्न महमूद आमुली अज़ किताब अल-नाहिय:)

इब्ने आसाक़िर ने रिवायत की के जंग के ज़माने में हज़रत अक़ील ने (हज़रत अली के भाई) अली रदीअल्लाहु अन्हु से कहा मुझे कुछ रुपए की ज़रूरत है दीजिए। फ़रमाया अभी नहीं है। आपने अर्ज़ किया के मुझे इजाज़त दीजिए के हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के पास चला जाऊँ। हज़रत अली ने फ़रमाया जाओ। हज़रत अक़ील हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के पास पहुँचे। हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने आपका बड़ा एहतराम किया और एक लाख रुपए नज़राना पेश किया। (सवाआइक़ मुहर्रिक़ा)

ये नमूना के तौर पर चंद वाक़िआत पेश किए गए वरना हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की बेमिस्ल सख़ावत के वाक़िआत बहुत हैं।

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ मुत्तक़ी और मुहीब

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के दिल में अल्लाह का ख़ौफ़, हुज़ूर ﷺ की अज़मत, अहले बैत अत्हार की महब्बत कमाल दर्ज़ा थी। आप इस से पहले पढ़ चुके हैं के हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ अपनी वफ़ात के वक़्त बार-बार फ़रमाते थे के काश मैं एक गाँव में ख़ामोश ज़िंदगी गुज़ारता और इन झगड़ों में न पड़ता। हुज़ूर ﷺ के नख़ुन शरीफ़, बाल, क़मीस मुबारक, तहबंद शरीफ़ के मुतअल्लिक़ वसिय्यत फ़रमाई के मुझे ग़ुस्ल दे कर मेरे कफ़न में ये चीज़ें रख दी जाएँ। इस वाक़िआत से हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के ख़ौफ़-ए-इलाही और अज़मत-ए-महबूब-ए-किब्रिया ﷺ का बख़ूबी पता लगता है।

नीज़ तवारिख़ से साबित है के हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ इमाम हसन रदीअल्लाहु अन्हु का इंतिहाई अदब व एहतराम करते थे और अहले बैत अत्हार के फ़ज़ाइल की मुतअद्दिद रिवायत आप से मर्वी हैं।

इमाम अहमद इब्न हंबल ने अपने मुस्नद में हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ से रिवायत की के नबी करीम ﷺ इमाम हसन रदीअल्लाहु अन्हु के ज़ुबान और होंट चूमा करते थे। फिर हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

“यह मेरा बेटा (हसन) सय्यद है और अल्लाह इसके ज़रिए मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह कर देगा।”मुआविया ने फ़रमाया कि ऐसी ज़बान और होंठ जिसे जनाब-ए-मुस्तफा ﷺ चूम चुके हों, उस को आग नहीं पहुँच सकती। (किताबुन नहिया)

इसी मुसनद अहमद इब्न हंबल में है कि एक शख्स ने हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ से कोई मसला पूछा। आप ने फ़रमाया कि यह मसला अली मुर्तज़ा ﷺ से पूछो, वह मुझ से बड़े आलिम हैं। उस ने कहा आप ही फरमा दें, मुझे आप का जवाब ज़्यादा पसन्द है। हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने फ़रमाया कि तू ने यह बहुत बुरी बात की, क्या तू उन से नफ़रत करता है जिन की तक़रीर ख़ुद नबी करीम ﷺ फरमाते थे उन के कमाल ए इल्म की बिना पर और जिन के बारे में सरकार ने फ़रमाया कि "ऐ अली, तुम मेरे लिए ऐसे हो जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के लिए हज़रत हारून, मगर मेरे बाद नबी नहीं" और जिन

हज़रत अली की अज़मत ए इल्म का यह हाल है कि जब हज़रत उमर फारूक को कोई मुश्किल दर-पेश आती थी तो हज़रत अली से हल करवाते थे। हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने यह फरमा कर उस शख्स से फ़रमाया "मेरे पास से उठ जा" और उस का नाम वज़ीफ़ा वालों के दफ़्तर से ख़ारिज कर दिया। (किताबुन नहिया) इन रिवायात को देखो और ग़ौर करो।

हज़रत अमीरे मुआ़विया ﷺ साहिबे-करामात हैं

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की बहुत सी करामात साबित हैं। आप साहिबे-करामात सहाबी-ए-रसूल हैं। चुनाँचे किताब तज़हीरुल जिनान में फ़रमाया कि सनद-ए-सहीह से रिवायत है कि जब हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ को हज़रत उस्मान ग़नी की शहादत की ख़बर पहुँची तो आपने फ़रमाया:

“मक्का वालों ने पैग़म्बर ﷺ को मक्का से अलग किया, लाज़िम है कि वहाँ ख़िलाफ़त का आफ़ताब कभी न हुआ होगा। मदीना वालों ने ख़लीफ़तुल-मुस्लिमीन उस्मान ग़नी को शहीद किया, वहाँ से ख़िलाफ़त निकल गई, अब कभी वहाँ ख़िलाफ़त न होगी।”

चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि फिर हरमैन शरीफ़ैन आज तक दारुल-ख़िलाफ़ा न बने। मक्का मु’अज़्ज़मा में तो अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने ख़िलाफ़त का दावा किया भी, मगर वह सिर्फ़ सूरत-ए-ख़िलाफ़त थी, हक़ीक़त-ए-ख़िलाफ़त न थी। लेकिन मदीना मुनव्वरा में सूरत-ए-ख़िलाफ़त भी न रही। सैय्यदुना अली मुरतज़ा ने कूफ़ा को अपना दारुल-ख़िलाफ़त बनाया और उनके बाद किसी ख़लीफ़ा ने मदीना मुनव्वरा को दारुल-ख़िलाफ़त न बनाया। यह हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की करामत है।

हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ ने जब यज़ीद को अपना वली-ए-अहद किया तो दुआ की:

“मौला! अगर यज़ीद इसका अहल न हो तो उसकी सल्तनत पूरी न फ़रमा।”

फिर ऐसा ही हुआ कि यज़ीद मर्दूद, हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ के बाद दो साल कुछ माह ज़िंदा रहा और उसकी सल्तनत पाए-तक़मील को न पहुँच सकी।-

इब्लिश और अमीरे मुआ़विया ﵁

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ का यह वाक़िआ तो मशहूर ही है कि आप एक दफ़ा अपने महल में सो रहे थे कि अचानक एक आदमी ने आप को जगाया तो आप ने उस से पूछा कि तू कौन है और इस महल में कैसे पहुँच गया।

वो बोला कि मैं इब्लीस हूँ।

आप ने फ़रमाया कि तेरा काम नमाज़ के लिये जगाना नहीं है बल्कि नमाज़ से सुलाना है।

अव्वलन उस ने बहाने बनाये मगर जब हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने उसे डराया धमकाया तो आख़िर बोला कि इस से पहले एक दफ़ा मैंने आप को फ़ज्र के वक़्त सुला दिया था जिससे आप की नमाज़ क़ज़ा हो गयी थी।

आप उस ग़म में इतना रोये कि मैंने फरिश्तों को आपस में कलाम करते सुना कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को इस रंज-ओ-ग़म की वजह से पाँच सौ नमाज़ों का सवाब दिया गया।

मैंने ख़याल किया कि अगर आज फिर आप फ़ज्र न पढ़ सके तो आज फिर रोयेंगे और ऐसा न हो कि एक हज़ार नमाज़ों का सवाब हासिल कर लें, इसलिये जगाया कि एक इसी नमाज़ का सवाब हासिल करें।

मसनवी शरीफ़ दफ़्तर दोम सफ़्हा 23 में मौलाना रूम क़ुद्दिसा सिर्रहु ने इस क़िस्सा को बहुत तफ़्सील से चौदह सफ़्हा में फ़रमाया

इस वाक़िआ से मालूम हुआ कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ बहुत आबिद-ओ-ज़ाहिद मक़बूल बारगाह-ए-इलाही थे, और इब्लीस जैसा ख़बीस जो किसी के क़ब्ज़ा में न आये वो आप के क़ब्ज़ा और गिरफ़्त से न छूट सका।

क्यूँ न हो जिस का हाथ जनाब-ए-मुस्तफ़ा ﷺ पकड़ लें उसके हाथ की गिरफ़्त से कौन छूट सकता था, और जो निगाह-ए-जमाल-ए-मुस्तफ़ा देख ले उस से कौन सी चीज़ छुप सकती है।

यही वाक़िआ एक दफ़ा हज़रत अबू हुरैरा को भी पेश आया था कि आप ने इब्लीस को पकड़ लिया तो छूट न सका।

बाब 3

इस बाब में दो अज़ीम सहाबा, हज़रत अली इब्न अबी तालिब और हज़रत मुआविया इब्न अबी सुफ़यान (रदीअल्लाहु अन्हुमा) के दरमियान जो इख़्तिलाफ वाक़े हुआ, उसका तहक़ीक़ी जायज़ा।

इख़्तिलाफ़ात का पस-ए-मंज़र

(हज़रत अली और अमीरे मुआविया ﵄ रदीअल्लाहु अन्हुमह के बीच का इख़्तिलाफ़ात तहक़ीक़ी जायज)

नबी-ए-करीम ﷺ के विसाल के बाद उम्मत-ए-मुस्लिमा ने ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के मुबारक दौर को देखा। हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली ﵁ के दौर में इस्लाम दुनिया के बड़े हिस्सों तक पहुँचा।

लेकिन हज़रत उस्मान ग़नी ﵁ की शहादत के बाद उम्मत में एक बड़ा फ़ितना पैदा हुआ। कुछ लोगों ने सियासी और दुनियावी मक़ासिद के लिए मुसलमानों के दरमियान इख़्तिलाफ़ात को हवा दी। इसी माहौल में जंग-ए-जमल और जंग-ए-सिफ़्फ़ीन जैसे वाक़िआत पेश आए।

अहले सुन्नत वल जमाअत का अकीदा यह है कि इन इख़्तिलाफ़ात को अदब और एहतियात के साथ समझा जाए। सहाबा-ए-किराम अली और मुआविया और दूसरे बुज़ुर्गान-ए-दीन के बारे में बदज़बानी या तौहीन से बचना ज़रूरी है। ये तमाम हस्तियाँ उम्मत की बेहतरीन जमाअत में से हैं, जिनके बारे में क़ुरआन और अहादीस में फ़ज़ीलत बयान हुई है।

इन तारीखी इख़्तिलाफ़ात से हमें यह सबक मिलता है कि जब फ़ितना फैलता है, तो मुसलमानों की एकता को नुक़सान पहुँचता है। इसलिए उम्मत को चाहिए कि वह इल्म, तहक़ीक़, सब्र और अदब के साथ दीन को समझे और आपसी नफ़रत व तफ़रक़े से बचे।

आमाल का दारोमदार नियतों पर

हज़रत हज़रत उमर इब्ने ख़त्ताब ﵁ से रिवायत है। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

तर्जुमा : "तमाम आमाल का दारोमदार नियतों पर है, और हर आदमी के लिए वही है जिसकी उसने नियत की। जिस शख़्स की हिजरत अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हो, तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल ही के लिए है। और जिस शख़्स की हिजरत दुनिया हासिल करने के लिए या किसी औरत से निकाह करने के वास्ते हो, तो उसकी हिजरत उसी चीज़ के लिए होगी जिसकी तरफ़ उसने हिजरत की है।" (सहीह अल-बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

मोमिन का नियत अमल से बेहतर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

"मोमिन की नियत उसके अमल से बेहतर होती है।" (अल-मु'जम अल-कबीर)

नोट : उपर के 2 अहादीस से मालूम होता है की किसी मोमिन खासकर साहबा के नियत को जाने बगैर सिर्फ अमल देखकर उसपर ऐतराजत करना और किसी सहाबी की शान में कलमा-ए-तअन ओ तौहीन कहना, उन्हें बुरा जानना, फ़ासिक़ मानना, उन में से किसी से बुग़्ज़ रखना ईमान की बर्बादी का खास सबब बन सकता है।

मौला अली और अमीरे मुआ़विया ؓ की नीयत

मौला अली और अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा दोनों की नीयत दुरुस्त थी। हज़रत अबू दर्दा और हज़रत अबू इमामा रदियल्लाहु त'आला अन्हमा ने सैयदना अली और हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा के दरमियान सुलह कराने के लिए जबरदस्त कोशिश फरमाई। वो हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो के पास गए तो उन्होंने फरमाया कि मेरी जंग सिर्फ उस्मान के खून की वजह से है।

अली ने क़ातिलों को पनाह दे रखी है। उनके पास जाओ और उनसे कहो कि हमें उस्मान के क़ातिलों से खून का बदला दिलवाए, अहले शाम में से सबसे पहले मैं (मुआविया) उनके हाथ पर बैत करूँगा। (अल-बिदाया व अन-निहाया जिल्द 7)

मौला अली खुद फरमाते हैं हमारे और मुआविया के दरमियान और कोई इख्तिलाफ नहीं था, सिर्फ खून-ए-उस्मान के बारे में गलतफहमी हो गई थी। (हासिल ए नहजुल बलागा)

यही वजह है कि नबी करीम ने इतनी क़त्ल व गारत के बाद भी उन्हें मुसलमान क़रार दिया है हदीस मिनल मुस्लिमीन। (बुखारी जिल्द 1)

जिसे हुज़ूर मुसलमान क़रार दे, हमारे इल्म और ऐतकाद में वो जन्नती है और जो शख्स उसे मग़ज़ूब, मलऊन और जहन्नमी कहे वो खुद मग़ज़ूब, मलऊन और जहन्नुमी और हबीब-ए-किबरिया से टक्कर ले रहा है।

तौबा की नियत और गुनाहों की बख़्शिश

हदीस शरीफ़ में है के सौ (100) आदमियों के क़ातिल ने जब सच्चे दिल से तौबा की तो अल्लाह ने उसे बख़्श दिया (बुख़ारी, मुस्लिम जिल्द 2, अल मुसनद)

अच्छी निय्यत से अपनी लाश जलाने की वसीयत करने वाला बख़्शा गया (बुख़ारी जिल्द 2) और बुरी निय्यत से जिहाद करने और इल्म पढ़ाने वाला जहन्नम में गया (मुस्लिम जिल्द 2)

मौला अली और अमीरे मुआविया ﵄ रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा दोनों की नियत दुरुस्त थी।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने जाती दुश्मनी या कुरआन ओ दीन का दुश्मन बनकर जंग नहीं किया यानी गुनाह किया ही नहीं अगर नफ़सानी या जाती तौर पर गुनाह भी कर ले तो तौबा के जरिए मोमिन बना जा सकता है जैसा की 100 आदमयों का कातिल का हाल, हाँ हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ से गुनाह नहीं बल्कि ख़ता-ए-इज्तिहादी (दलीलों को समझने या किसी मसले में राय क़ायम करने में इंसानी गलती हो जाना, जबकि नीयत हक़ तक पहुँचने की हो) हुआ।

हज़रत अबू दरदा और हज़रत अबू इमामा रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा ने सैय्यदना अली और हज़रत अमीरे मुआविया रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा के दरमियान सुलह कराने के लिए ज़बरदस्त कोशिश फ़रमाई। वो हज़रत अमीरे

मुआविया ﷺ के पास गए तो उन्होंने फ़रमाया के मेरी जंग सिर्फ उस्मान के ख़ून की वजह से है।

अली ने क़ातिलों को पनाह दे रखी है। उनके पास जाओ और उन से कहो के हमें उस्मान के क़ातिलों से ख़ून का बदला दिलवाए, अहले शाम में से सब से पहले मैं उनके हाथ पर बैत करूँगा। (अल बिदाया व निहाया जिल्द 7)

मौला अली ख़ुद फ़रमाते हैं हमारे और मुआविया के दरमियान और कोई इख़्तिलाफ़ नहीं था, सिर्फ ख़ून-ए-उस्मान के बारे में ग़लतफ़हमी हो गयी थी

(हासिल-ए-नहज अल बलाग़)

दोनों की नेक नियती के वजह से नबी करीम ने इतनी क़त्ल व ग़ारत के बाद भी उन्हें मुसलमान क़रार दिया है हदीस मिनल मुस्लिमीन (बुख़ारी जिल्द 1)

इज्तिहादी इख़्तिलाफ का होना इंसानी फितरत है

हज़रत अली और हज़रत मुआविया (रदीअल्लाहु अन्हुमा) के दरमियान जो इख़्तिलाफ हुआ, वो इख़्तिलाफ फिल-हक़ीक़त इज्तिहादी था। दोनों अपने-अपने मक़ाम पर हक़ पर थे, और दोनों का मक़सद इस्लाम और उम्मत की भलाई था। मगर सियासी हालात, क़त्ल-ए-उस्मान का मसला, और खारिजियों का फसाद इस इख़्तिलाफ का सबब बना।

इख़्तिलाफ़ का मतलब अदावत नहीं

हज़रत अली और मुआविया (रदीअल्लाहु अन्हुमा) का इख़्तिलाफ़ दीन के मसले में था, ना कि ज़ाती या माली मक़ासिद के लिए। अहले-सुन्नत का यक़ीन है कि ये इख़्तिलाफ़ात इज्तिहाद पर मबनी थे और इन में कोई भी जानबूझ कर गुनाहगार या ज़ालिम नहीं था।

इख़्तिलाफ़ रहमत भी है

हम बरेलवी सुन्नियों का मौकिफ़ है कि हक़ वालों की आपसी इख्तिलाफ रहमत है जैसे सहाबा का इख़्तिलाफ़, इमाम का इख़्तिलाफ़ यानी वो इख़्तिलाफ़ जो नफ्सनी और शैतानी और दुनिया हुसूली के लिए न हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम है

"इख़्तिलाफु उम्मती रहमतुन"(बैहक़ी)

तर्जुमा : (मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ़ रहमत है।)(बैहक़ी)

सहाबा का इख़्तिलाफ़ रहमत है

किताब **"अल-इहतिजाज तबसरी"** में है कि **यानी मेरे सहाबा का इख्तिलाफ तुम्हारे लिए रहमत है।** (अल-इहतिजाज तबसरी जिल्द 2)

हुज़ूर अकरम ﷺ ने सहाबा के इख्तिलाफ को रहमत क़रार दिया है और आप उस इख्तिलाफ पर उन्हें जहन्नुम वासिल कर रहे हैं। ऐसा न हो कि क़यामत के दिन मौला अली और अमीरे मुआविया रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा एक दस्तरख्वान पर मौजूद हों और आपकी बदतमीज़ी आपके गले का फंदा बन चुकी हो।

अल्लाह करीम इरशाद फरमाता है कि यानी हम उनके दिलों से नाराज़गियाँ ख़त्म कर देंगे, वो भाई-भाई हो जाएँगे और एक दूसरे के आमने-सामने तख़्तों पर बैठे होंगे। (सूरा अल-हिज्र 47)

हज़रत अली से अमीरे मुआविया ؓ की वजह-ए-मुखालिफ़त

मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी अलैहिर रहमा लिखते है कि :

ये भी मालूम होना ज़रूरी है के आखिर अमीरे मुआविया ؓ को अली मुर्तज़ा से क्या इख़्तिलाफ़ हुआ और क्यों हुआ। हज़रत उस्मान इब्न अफ़्फ़ान रदीयल्लाहु अन्हु के घर का मिस्रियों ने मुहासरा किया। तीन दिन या ज्यादा तक पानी न पहुँचने दिया और फिर घर में दाख़िल हो कर मुहम्मद इब्न अबी बकर अस-सिद्धीक़ और 13 अन्य आदमियों ने उन्हें निहायत बे-दर्दी से शहीद किया। आपकी शहादत के बाद आमीरुल-मुमिनीन अली मुहाजिरीन व अंसार के इत्तेफ़ाक़-ए-राए से खलीफ़ा बर-हक़ मुकर्रर हुए लेकिन चंद वजहात की बुनियाद पर क़ातिलीन-ए-उस्मान ग़नी से क़िसास (ख़ून के बदले ख़ून) न लिया जा सका। ये खबरें शाम में अमीरे मुआविया ؓ को पहुँचीं। उन्होंने पैग़ाम भेजा के "खलीफ़त-उल-मुस्लिमीन का ख़ास मदिना शरीफ़ में शहीद कर दिया

जाना बहुत ही अहम मामला है। आज-राह-ए-क़रम सब से पहले क़ातिलीन पर क़िसास जारी किया जाए।" लेकिन कुछ मजबूरियों की बुनियाद पर क़िसास न लिया जा सका।

इधर अमीरे मुआविया ﵁ के दिल में ये बात ज़ेहन नशीं कराई गई के अली मुर्तज़ा (मुअज़ अल्लाह) दीदाह-दानिस्ता (जान बुझ कर) क़िसास लेने में कोताही फ़रमा रहे हैं और इस क़त्ल में (नाअउज़ुबिल्लाह मिन्हु) उनका हाथ है बल्कि खुद उनके (हज़रत उस्मान के) क़ातिलीन को पुलिस या फौज में भर्ती कर लिया गया है।

गरज के बीच के 5 फसादियों नें अमीरे मुआविया ﵁ के दिल में ये बात जान-नशीं कर दी के अली मुर्तज़ा दीदाह-दानिस्ता क़िसास जारी करने में चश्म पोशी फ़रमा रहे हैं। अमीरे मुआविया ﵁ की तरफ़ से बराबर क़िसास का मुतालबा रहा। अभी तक न आपकी ख़िलाफ़त का इंकार था न अपनी हुकूमत अलग करने का ख़्याल, सिर्फ़ ख़ून-ए-उस्मान के क़िसास (ख़ून का बदला ख़ून) का मुतालबा (मांग) था। जैसा की कुरआन मे अल्लाह का फरमान है

तर्जुमा : **"ऐ ईमान वालो! तुम पर क़त्ल किए गए लोगों के बारे में क़िसास (ख़ून का बदला ख़ून) फ़र्ज़ किया गया है" (**सूरह अल-बक़रह,आयत नं 178)

और आगे फ़रमाया:

तर्जुमा :"**और तुम्हारे लिए क़िसास (ख़ून का बदला ख़ून) में ज़िंदगी है, ऐ अक़्ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार बनो।"** (सूरह बक़रह, आयत नं 179)

आख़िर नौबत यहाँ तक पहुँचि के अमीरे मुआविया ﵁ के दिल में ये बात जागज़ीन (गलतफ़अमी से) हो गई के अली मुर्तज़ा ख़िलाफ़त के लायक नहीं और वो ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियों को पूरी तरह अदा नहीं कर सकते क्योंकि इतने बड़े अहम ख़ून का क़िसास न लिया जा सका तो दीगर इंतिज़ामी काम क्या अदा हो सकेंगे?

इख़्तिलाफ़ की असल बुनियाद यह थी। बाकी सारे इख़्तिलाफ़ात इस जड़ की शाख़ें थीं। दीगर तमाम हज़रत की वजह-ए-मुखालिफ़त भी यही क़त्ल-ए-उस्मानी था। अब सहाबा कराम की तीन जमातें हो गईं। एक वो जो गैर

जानिबदार रहे, किसी तरफ़ जंग में शरीक न हुए, जैसे अब्दुल्लाह इब्न अब्बास, अब्दुल्लाह इब्न उमर, अब्दुल्लाह इब्न सलाम वगैरह। बाज़ वो जो हज़रत अली के मुखालिफ़ रहे, जैसे हज़रत आयशा, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत मुहम्मद इब्न तल्हा, अमीरे मुआविया ﵁। और बाज़ वो जो हज़रत अली मुर्तज़ा के मु'विन हुए, जैसे हज़रत अली के तमाम हक़-परस्त साथी (रिज़वानुल्लाही अलैहिम अज्माअीन)।

ख़याल तो करो के हज़रत आयशा सिद्दीक़ाह हज़रत अली के ख़िलाफ़ थीं और हज़रत आयशा सिद्दीक़ाह के हक़ीक़ी भाई हज़रत अब्दुर रहमान हज़रत अली की फ़ौज के सिपाही थे। खुद हज़रत अली के भाई अकील इस जंग के ज़माने में गैर जानिबदार रहे और हज़रत अली की इजाज़त से अमीरे मुआविया ﵁ के घर मेहमान बन कर रहे, जिस के हवाले पहले गुज़र चुके। (हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ पर एक नज़र, पेज नं 70)

हज़रत अली और हज़रत मुआविया का इख़्तिलाफ़

यह इख़्तिलाफ़ दरअसल उम्मत की भलाई के तरीके पर था – न कि ईमान या इस्लामी उसूलों में। हज़रत मुआविया ﵁, बतौर रिश्तेदार और गवर्नर-ए-शाम, उस्मान ﵁ के क़ातिलों को सज़ा दिलाने का मुतालबा कर रहे थे। उनका कहना था कि जब तक क़ातिल सज़ा नहीं पाते, तब तक खिलाफ़त की बैअत नहीं करेंगे। जब्कि हज़रत अली ﵁ का मवक़्फ़ यह था कि हालात काबू में आने के बाद ही अदालती कारवाई मुमकिन है, वरना फ़साद और तैज़ होगा।

इस इख़्तिलाफ़ में दोनों पक्षों ने क़ुरआन के उसूल पर अमल किया – क्योंकि दोनों ही अल्लाह के हुक्म के मुताबिक अम्न और इंसाफ़ चाहते थे। जब जंग सिफ़्फ़ीन के बाद मामला तहकीम (मुआहिदा) की तरफ़ गया तो ये उसी आयत का अमली पहलू था – जहाँ अल्लाह ने सुलह की हिदायत दी।

क़ुरआन में है

आयत 1 तर्जुमा : **"बेशक मोमिन आपस में भाई-भाई हैं, इसलिए अपने दो भाइयों के बीच सुलह करवा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहमत की जाए।"** (सूरह अल-हुजुरात (49:10)

आयत 2 (तर्जुमा) : **"और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़े तो उनमें सुलह कराओ फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उनमें इस्लाह कर दो और इन्साफ़ करो, बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को प्यारे हैं"** (सूरह अल-हुजुरात, आयत 9)

हदीस मे रसूलुल्लाह ﷺ की पेशीनगोई:

"मेरा बेटा हसन सरदार है, अल्लाह इसके ज़रिए दो बड़े गिरोहों (हज़रत अली और हज़रत मुआविया) में सुलह कराएगा।"

(सहीह बुखारी (हदीस नंबर: 3746 - किताब अल-मनाकिब, बाब मनाकिब अल-हसन वल-हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

बाग़ी और दुश्मन में फ़र्क़ है:

1. बाग़ी : "बाग़ी" उस व्यक्ति या गिरोह को कहते हैं जो किसी हाकिम, अमीर या निज़ाम के खिलाफ़ निकल खड़ा हो, लेकिन वह दायरा-ए-इस्लाम से बाहर न हो।
यानी उससे ग़लती, बग़ावत या इख़्तिलाफ़ हुआ हो, मगर उसे हमेशा काफ़िर या इस्लाम का दुश्मन नहीं कहा जाता।

2. दुश्मन : "दुश्मन" वह होता है जो जानबूझकर अदावत, नुक़सान, नफ़रत और तबाही का रास्ता अपनाए, और इस्लाम या मुसलमानों के खिलाफ़ दुश्मनी रखे।

अमीरे मुआ़विया ؓ बाग़ी और मुर्तद नहीं

क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह करीम जल्ला शानहू का इर्शाद है के :

तर्जुमा : "अगर मोमिनो के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके दरमियान सुलह करा दो, फिर अगर उन में से एक गिरोह दूसरे पर बग़ावत करे तो जो बग़ावत करता है उसके ख़िलाफ़ उस वक़्त तक जंग जारी रखो जब तक वो अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रुजू नहीं करता।" (अल हजुरात : 9)

इस आयत में मोमिनीन के दो गिरोह का ज़िक्र है जो आपस में लड़ पड़े। हुक्म यह है के मोमिनो का एक गिरोह वो अगर मोमिनो के दूसरे गिरोह पर बग़ावत करे तो मज़लूम का साथ दो। यहाँ बग़ावत करने वाले को भी मोमिन कहा गया है और जिस के ख़िलाफ़ बग़ावत की गयी हो उसे भी मोमिन कहा गया है। मालूम हुआ के हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो का गिरोह बाग़ी होने के बावजूद मोमिन है।

इसी तरह और आयत में अल्लाह करीम इर्शाद फ़रमाता है : ज़ुल्म करने वाले लोग हक़ के बग़ैर बग़ावत करते हैं। (शूरा 42)

इस आयत से मालूम हुआ के एक बग़ावत हक़ पर होती है और दूसरी बग़ावत हक़ के बग़ैर होती है। यही बात अहले लुग़ात ने भी लिखी है,

इमाम राग़िब अशफ़ी रहमतुल्लाह अलैह यही आयत नुक़ल करने के बाद फ़रमाते हैं : अल्लाह त'आला ने हक़ के बग़ैर बग़ावत करने पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया है। (मुफ़रदात ए राग़िबा)

इसी आयत से लफ्ज़ बग़ावत करते हुए लिखते हैं : बग़ावत अच्छी भी होती है और बुरी भी (मुफ़रदात) अल मुंजद में बग़ावत के दो मा'आनी लिखे हैं 1 तलाश करना या मुतालबा करना 2 ज़ुल्म ना फ़रमानी करना (अल मुंजद उर्दू सफ़हा 94)

क़ुरआन और लुग़ात की रौशनी में वाज़ेह हो गया के बाग़ी का लफ़्ज़ वसीह है और हर बाग़ी काफ़िर और जहन्नुमी नहीं होता बल्कि उस लफ़्ज़ का इतलाक़ मोमिनीन सादक़ीन पर भी होता है।

बाग़ी का मा'आनी कुछ भी हो, नबी करीम ﷺ अपने किसी ग़ुलाम के लिए यह लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाए तो उस में कोई हर्ज़ नहीं। आप ﷺ बड़े हैं और छोटों की तन्बीह और सब कर सकते हैं। जिस तरह अल्लाह करीम ने हज़रत सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाया के وَعَصٰى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى (ताहा : 121) इस आयत का तर्जुमा उलेमा ने इस तरह फ़रमाया के आदम से अपने रब का हुक्म बजा लाने में भूल हुई तो जन्नत से बेरहा हो गए। हालांकि क़ुरआन के असल अल्फ़ाज़ وَعَصٰى और فَغَوٰى बड़े सख़्त हैं عَصٰى का लफ़्ज़ी मा'आनी नाफ़रमान और غَوٰى का लफ़्ज़ी मा'आनी है गुमराह हुआ।

क्या आप यह जुर्रत कर सकते हैं के जिस तरह आप ने हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ को बग़ावत के लफ़्ज़ की वजह से बाग़ी कहा है उसी तरह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को भी आसी और ग़ावी कह दें ?

अगर आप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नबुवत तावील पर मजबूर कर रही है तो इसी तरह हमें भी हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ की सहाबियत उनके फ़ज़ाइल तावील पर मजबूर कर रहे हैं।

सानियन जिसे हम सहाबी कह रहे हैं और आप बाग़ी व मुर्तद साबित कर रहे हैं उसी को नबी करीम ﷺ ने मौला अली से जंग लड़ चुकने के बाद मुसलमान क़रार दिया है (बुख़ारी जिल्द 1) लिहाज़ा नबी करीम ﷺ के फ़ैसले के मुताबिक़ वो सहाबी ही थे। बाग़ी व मुर्तद नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो फ़रमाते हैं के मुआविया को कुछ ना कहो, वो रसूल्लाह ﷺ के सहाबी हैं। (बुख़ारी जिल्द 1) लिहाज़ा अमीरे मुआविया ﷺ रदियल्लाहु त'आला अन्हो सहाबी हैं, बाग़ी और मुर्तद नहीं। (अली और मुआविया , रोमन)

बाग़ी व ख़ारिजी

बाग़ी वह मुसलमानों की जमाअत है जो ख़लीफ़ा बर्हक़ के मुक़ाबिल आ जाए किसी ग़लतफ़हमी की बिना पर न कि नफ़सानी और दुनियावी वजह से।

ख़ारिजी वह लोग हैं जो ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन की इताअत से फ़ितना ओ फ़साद फैलाने के लिये निकल जाएँ, उन दोनों के अहकाम जुदाग़ानाह हैं।(हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ पर एक नज़र)

इज्तेहाद का मतलब

जिस मसले का हल क़ुरआन व हदीस और इज्मा में ना मिले तो क़यास के ज़रियेह उसका हल निकालना इज्तेहाद कहलाता है | वाज़ेह हुक्म मौजूद ना होने की सूरत में इज्तेहाद की ज़रूरत होती है। मुज्तहिद के लिए क़ुरआन व सुन्नत का इल्म होना और इज्माई मसाइल से वाक़िफ़ होना ज़रूरी है।

मुज्तहिद को अपनी ख़ता का इल्म हो जाये तो उस पर रुजू करना लाज़िम है लेकिन उसे अपनी ख़ता का इल्म ना हो सके और वो ख़ुद हक़ पर ही समझ रहा हो तो उस की ख़ता माफ़ है बल्कि उसे इज्तेहादी ख़ता पर अजर मिलेगा (मुस्लिम व बुख़ारी ,मिश्कात शरीफ़)

दूसरा सैय्यदा आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु त'आला अन्हा का मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो के ख़िलाफ़ जंग करना इस बात का वाज़ेह सबूत है के यह मसला वाक़ई इज्तेहादी था और उस में ग़लतफ़हमी की वाज़ेह गुंजाइश मौजूद थी और सिर्फ़ अमीरे मुआविया ﷺ ही नहीं बल्कि उम्मुल मोमिनीन रदियल्लाहु त'आला अन्हा भी उस ग़लतफ़हमी का शिकार हुईं। मुज्तहिद का अपने मौक़िफ़ पर डटे रहना या उस से रुजू कर लेना एक अलग बहस है, इज्तेहाद की शराइत कुछ भी हो, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ रदियल्लाहु त'आला अन्हो को मुज्तहिद (फ़क़ीह) क़रार दिया है (बुख़ारी जिल्द 1) लिहाज़ा यह सवाल आप इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो से पूछें के मुज्तहिद की शराइत क्या हैं और आपने मुआविया को फ़क़ीह क्यों क़रार दिया है। (अली और मुआविया, रोमन, जवाब 5)

मुआविया और इज्तिहादी ख़ता

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी अलैहिर्रहमह लिखते है की

निहायत ज़रूरी और अशद लाज़िम यह है कि सहाबा-ए-किराम की आपस की जंगों के मुतअल्लिक़ हम कुछ राए ज़नी न करें न उन में से किसी को बुरा समझें। सब को सच्चा पक्का परहेज़गार यक़ीन करें और अगर ज़रूरतन इसके मुतअल्लिक़ गुफ़्तगू करना पड़े तो ख़याल रखो कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली-उल-मुर्तज़ा रदीअल्लाहु अन्हु अपने वक़्त में ख़लीफ़ा बर्हक़ थे उनके मुक़ाबिल वाले तमाम सहाबा-ए-किराम ग़लतफ़हमी में मुब्तला हो गए! और आप के मुक़ाबिल बग़ावत कर गए जिन में से बा'ज़ हज़रात अपनी ग़लती पर नादिम हो कर बाद में ताएब हो गए। जैसे उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा और उस सरकार के साथी और बा'ज़ हज़रात आख़िर तक

अपनी गलती समझ ही न सके। जैसे हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ और उनके साथी मगर उनकी जंग ग़लतफ़हमी पर आधारित जंग थी। (हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ पर एक नज़र)

दुश्मन और मुखालिफ़ में फ़र्क़

जान लो के हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ अहल-ए-बैत अत-हार या अली मुर्तज़ा के दुश्मन नहीं थे बल्कि उनके मुखालिफ़ थे। दुश्मनी और मुखालिफ़त में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। दुश्मन तो अपने मद मुक़ाबिल की जान या माल या आबरू या दीन का ही सर्से दुश्मन होता है के उन चीज़ों को फ़ना करना चाहता है, मगर मुखालिफ़ वो है जो किसी मस'अला में इख़्तिलाफ़ राय कर बैठा, अगरचे ये इख़्तिलाफ़ लडाई झगड़े तक पहुँच जाए, मगर इस की बुनियाद इसी राय का इख़्तिलाफ़ है। दिन रात बाप बेटा, पति पत्नी, भाई भाई इख़्तिलाफ़ राय की बुनियाद पर लड़ते झगड़ते रहते हैं। सुलतान ग़ाज़ी मुहियुद्दीन और औरंगजेब आलमगीर रहिमहुल्लाह की अपने भाईयों, ख़सूसन दर अल-शिक़वह से बड़ी म'राका की जंगें रही हैं, मगर इस के बावजूद वो दुश्मन नहीं थे, भाई थे।

उन्हें सुलतान औरंगजेब ने इख़्तिलाफ़ राय की बुनियाद पर अपने वालिद शाहजहाँ को नजरबंद कर दिया, मगर इस के बावजूद आपस में दुश्मन नहीं थे, बाप बेटा थे। क़ुरआन करीम ने भी इख़्तिलाफ़ और दुश्मनी में फ़र्क़ फ़रमाया। लड़ने झगड़ने वाले मुसलमानों के बारे में इर्शाद हुआ:

(तर्जुमा) : **मुसलमान मुसलमान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुलह करो।** (सुरह हुज़रात, आयत नं 10)	إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ

जानी या ईमानी दुश्मनों के बारे में फ़रमाया:

(तर्जुमा) : **ऐ ईमान वालो! तुम्हारी बा'ज़ बीवियाँ और बा'ज़**	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ

औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो। (सुरह हुज़रात, आयत नं 10)	وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ

देखो वहाँ लड़ाई झगड़े के बावजूद अजनबी मुसलमानों को भाई बताया और यहाँ दीनी मुख़ालिफ़ औलाद और बीवियों को दुश्मन क़रार दे कर उन से परहेज़ का हुक्म दिया। फ़र्क़ करना बहुत ज़रूरी है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने उन पर इन्तहाई ज़ियातियाँ कीं, मगर इस के बावजूद याक़ूब अलैहिस्सलाम ने या क़ुरआन करीम ने उन्हें यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दुश्मनों की सफ़ में खड़ा न किया। ये हज़रत यूसुफ़ की जान या ईमान के दुश्मन नहीं थे, बल्कि याक़ूब अलैहिस्सलाम के इस तरीक़ा के मुख़ालिफ़ थे कि वो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से ज़्यादा महब्बत करते थे और हम से कम। इस का नतीजा यह हुआ कि क़ुरआन करीम ने उन्हीं मुख़ालिफ़ भाइयों को आसमान हिदायत का तारा फ़रमाया कि इरशाद हुआ:

(तर्जुमा) : याद करो जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें अपने लिये सिजदा करते देखा। (सुरह यूसुफ़, आयत नं 4)	إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ

देखो, बरादरान-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इस इन्तहाई ज़ियातियों और ज़ुल्म के बावजूद तारों की शक्ल में दिखाए गए, यानी हादी और महदी। हुज़ूर फरमाते हैं, "मेरे सहाबा तारे हैं, जिस की पैरावी करोगे हिदायत पा जाओगे।" इसी तरह हज़रत अमीरे मुआविया ﵁, वो इस क़दर मुख़ालफ़त के बावजूद सहाबी-ए-रसूल और आसमान-ए-हिदायत के तारे हैं। निज़ याक़ूब अलैहिस्सलाम इस फ़िराक़-ए-युसूफ़ी के ज़माने में उन बरादरान-ए-युसूफ़ अलैहिस्सलाम को अपनाया। युसूफ़ अलैहि सलाम का दुश्मन न जाना, वरना उनके कुफ़्र का फ़तवा देते और अपने घर से बाहर निकाल देते क्योंकि नबी की दुश्मनी कुफ़्र है और काफ़िर से मेल जोल हराम। युसूफ़ अलैहि सलाम ने भी

उन्हें अपना दुश्मन न क़रार दिया बल्कि पहला बार जब ये हज़रत गल्ला लेने गए तो उनका एहतराम फ़रमाया और इज़्ज़त से मेहमान बनाया। कहो, दुश्मन-ए-नबी तो काफ़िर होता है, फिर उसकी मेहमाननवाज़ी कैसी।

फिर जब युसूफ़ अलैहि सलाम से माफी माँगी तो ये अल्फ़ाज़ अर्ज़ किए:

(तर्जुमा) : **बोले ख़ुदा की क़सम बेशक अल्लाह ने आपको हमपर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़ता वाले थे।** (सुरह यूसुफ़, आयत नं 91)	قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخَاطِئِيْنَ

इस में उन हज़रत ने अपने कुफ़्र वगैरह का इकरार न किया बल्कि अपने को सिर्फ़ ख़तावार कहा। युसूफ़ अलैहि सलाम ने उन्हें तौबा का हुक्म न दिया बल्कि सिर्फ़ यह फ़रमाया:

(तर्जुमा) : **कहा आज तुमपर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे ।** (सुरह यूसुफ़, आयत नं 92)	قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ

अगर कुफ़्र होता तो उन्हें दोबारा मुसलमान किया जाता, निकाह की तजदीद कराई जाती। हज़रत साराह ज़ौज-ए-इब्राहिम अलैहि सलाम ने हज़रत हाजराह और उनके फ़रज़ंद हज़रत इस्माइल अलैहि सलाम को बे-दाना पानी बे-साया वाले जंगल में डालवा दिया मगर इस जोश-ए-मुखालिफ़त से जनाब साराह को न काफ़िर क़रार दिया न फासीक। के ये सब इख़्तिलाफ़ की बुनियाद पर हुआ, बल्कि वो अम्बिया बनी इस्राइल की वालिदाह मोहतरमाह हैं। यही मामला यहाँ हुआ के जिन बुज़ुर्गों ने हज़रत अली की मुखालिफ़त पर निदामत की जैसे हज़रत आयशा सिद्दीक़ाह, उनके साथ अली मुर्तज़ा ने वो बरताव किया जो प्यारा प्यारे से करता है। जो उनकी मुखालिफ़त करते हुए शहीद हुए, जैसे हज़रत मुहम्मद इब्न तल्हा, ज़ुबैर, तल्हा, उनके जन्नती होने की अली मुर्तज़ा ने खबर दी और जो आख़िर तक आप से लड़ते रहे जैसे हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ वगैरह, उन्हें फ़रमाया के "हमारे भाई हैं। हम से बाग़ी हो

गए, उनके माल न लूटे, उन्हें क़ैद न किया, उन पर दुश्मनों के एहकाम जारी न फ़रमाए।

अमीरे मुआ़विया ﷺ के दिल में बुग़्ज़ नहीं था

अमीरे मुआविया ﷺ के दिल में मौला अली का बुग़्ज़ नहीं था। और ना ही वो जंग व दज्ल बुग़्ज़ की बिना पर था। जिस तरह सैय्यदना मूसा व सैय्यदना हारून अलैहिस्सलाम के दिलों में एक दूसरे का बुग़्ज़ ना था मगर हज़रत मूसा ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की दाढ़ी मुबारक पकड़ ली और जिस तरह मौला अली के लिए सैय्यदा आयशा रदियल्लाहु त'आला अन्हा के दिल में बुग़्ज़ ना था मगर फिर भी जंग हुई और सैय्यद उल निसा, सैय्यदना फ़ातिमा ज़ोहरा रदियल्लाहु त'आला अन्हा और मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो के दरमियान झगड़ा हुआ। मालूम हुआ के जंग या झगड़े के लिए बुग़्ज़ का होना ज़रूरी नहीं। (अली और मुआविया, रोमन)

जंग का आग़ाज़ और हिकमत-ए-अमली

हज़रत अली ﷺ का मंशा जंग से परहेज़ था, मगर ख़ारिजियों और फसादी अनासिर की वजह से मामला संगीन बन गया। इसी तरह हज़रत मुआविया ﷺ भी जंग को आख़िरी हल मानते थे। मगर हालात इस हद तक बढ़ चुके थे कि दोनों को अपने-अपने लश्कर के साथ मैदान में उतरना पड़ा।

ख़ारिजियों का फितना और उम्मत पर असर

जंग-ए-सिफ्फ़ीन के बाद इस्लामी उम्मत को एक ऐसे गिरोह का सामना करना पड़ा जिसने ना सिर्फ़ सहाबा बल्कि खुद खिलाफ़त-ए-राशिदा की बुनियाद को भी चैलेंज किया। ये थे ख़ारिजी – एक इंतिहापसंद और ग़लतफहमी में गिरा हुआ गिरोह। इनका फितना उस वक़्त शुरू हुआ जब हज़रत अली ﷺ ने तहकीम (यानि जब अमीरे मुआविया ﷺ से सुलह) को मंज़ूर किया।

ख़ारिजी किसे कहते हैं?

'ख़ारिजी' लफ़्ज़ 'खुरूज' से निकला है, जिसका मतलब है बगावत करना। यह वो लोग थे जो पहले हज़रत अली ﷺ के लश्कर में थे मगर तहकीम को 'कुफ्र' समझते हुए आप के खिलाफ़ बगावत कर बैठे। इनका नारा था: **"हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है!"**

ख़वारिज जिस नारे को पढ़ते थे – "हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है" – वह क़ुरआन की इस आयत से लिया गया है:

إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ

तर्जुमा : **"हुक्म तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है।"** (सूरह यूसुफ़, आयत 40)

और एक जगह:

إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

तर्जुमा : **"हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है, उसी पर मैंने भरोसा किया।"**
(सूरह यूसुफ़, आयत 67)

ख़वारिज ने इन आयतों का ग़लत मतलब निकालकर तहकीम के मसले (जंग-ए-सिफ़्फ़ीन के बाद के हज़रत अली और हज़रत मुआविया के दरमियान झगड़े को सुलझाने के लिए दोनों तरफ से हकम (हुक्म करने वाले) मुक़र्रर किए गए थे। इसी को "तहकीम" कहा जाता है।) ख़वारिज का अक़ीदा था की किसी हुक्म सिर्फ अल्लाह का मानेंगे इस गलत अकीदे के बुनियाद पर हज़रत अली को काफिर कहा की ये कुरआन के मुखालफत करना है ,

जबकि अहले सुन्नत के नज़दीक उनका यह तरीका ग़लत तावील और ग़ुलू पर आधारित था।

हज़रत अली का अक़ीदा कुरआन के इस आयत के मुवाफ़िक़ था

क़ुरआन मजीद में अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो, रसूल की इताअत करो और उन लोगों की भी जो तुम में हुकूमत वाले हैं।"
(सूरह अन-निसा, आयत 59)

अहले सुन्नत का यही अक़ीदा रहा है और आज हम बरेलवी सुन्नियों का भी यही अक़ीदा है।

हज़रत अली रदीअल्लाहु अन्हु की शहादत और उम्मत पर असर

हज़रत अली ﵁ की शहादत इस्लामी तारीख़ का एक दिल सोज़ और अहम मोड़ है। आप खिलाफ़त-ए-राशिदा के आख़िरी खलीफा थे और आपके इंतिकाल के साथ एक ऐसा दौर ख़त्म हुआ जो अद्ल, इख़लास और हिदायत से भरपूर था।

शहादत का सबब

जैसे ही तहकीम से कोई फ़ैसला ना निकला और ख़ारिजी फितना और तेज़ हुआ, तो तीन सहाबा – हज़रत अली ﵁, हज़रत मुआविया ﵁, और हज़रत अम्र बिन आस ﵁ – को निशाना बनाने का फैसला किया गया। अब्दुर्रहमान इब्न मुलजिम नामी एक शख़्स ने हज़रत अली ﵁ पर हमला किया।

हमला और शहादत

17 रमज़ान 40 हिजरी को हज़रत अली ﵁ कोफ़ा की मस्जिद में फ़ज्र की नमाज़ के लिए तशरीफ लाए। अब्दुर्रहमान इब्न मुलजिम ने तलवार से वार किया जिससे आप ज़ख्मी हो गए। दो दिन बाद, 21 रमज़ान को आप की शहादत हुई।

आख़िरी अल्फ़ाज़

आपके आख़िरी अल्फ़ाज़ में यह तसल्ली और ईमान की झलक थी:

"फ़ुज़्तु वा रब्बिल काबा!" – "काबा के रब की क़सम, मैं कामयाब हो गया।"

उम्मत पर असर

आपकी शहादत से उम्मत को बहुत बड़ा सियासी और रुहानी नुकसान हुआ। आप हक़, इन्साफ़ और तौज़ुन के अलामत थे। आप की रहनुमाई और इख़लास से उम्मत को रहनुमाई मिलती थी। आपकी शहादत के बाद उम्मत में इख़्तिलाफ़ और सियासी फ़ितने और तेज़ हो गए।

हज़रत हसन ﵁ की सुलह

हज़रत अली ﵁ की शहादत के बाद, लोगों ने हज़रत हसन ﵁ के हाथ पर बैअत की। आप को जंगी तजुर्बा कम था, मगर इल्म, इखलास और सादगी में मिसाली थे। मगर आपने जल्द ही ये महसूस कर लिया कि उम्मत जंग से थक चुकी है और सुलह ही बेहतरीन हल है। हज़रत हसन ﵁ ने जब खलीफ़ा बनते ही हज़रत मुआविया ﵁ से सुलह की, तो यह सूरह हूज़ुरात की आयत 10 की शानदार ताबीर थी:

"मोमिन भाई-भाई हैं, तो उनके दरमियान सुलह करा दो।" सूरह अल-हुजुरात, आयत 10)

हज़रत हसन ने उम्मत की भलाई के लिए अपनी खिलाफ़त छोड़ दी और हज़रत मुआविया को अम्न व इत्तिहाद के लिए खिलाफ़त सौंप दी। ये अमली तौर पर उसी हिदायत की ताबीर थी, जिसे सूरह अल-हुजुरात में अल्लाह ने फ़रमाया।

बैअत और अम्न

हज़रत हसन ﵁ ने हज़रत मुआविया ﵁ के साथ सुलह कर के खिलाफ़त छोड़ दी और उम्मत को एक बड़े फितने से बचाया।

दोंनो गिरोह हक़ पर थे

हज़रत अली कर्रम-अल्लाहु वजहहू को शहीद कर दिया और फिर इराक़ियों ने सैय्यदना हसन ﵁ की खिलाफ़त का इ'लान किया, जिन्होंने बग़ैर किसी क़िस्म की जंग के सैय्यदना अमीरे मुआविया ﵁ अलैहिस्सलाम से सुल्ह करके बै'अत कर ली। (सहीह अल-बुख़ारी, किताब अस-सुल्ह)

इस सुल्हनामे में मंज़ूमह दूसरी शर्तों के एक शर्त यह भी थी कि जो मुसलमान अमीरुल-मु'मिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु त'आला अन्हु की तरफ़ से लड़े थे, उनके ख़िलाफ़ कोई इंतिक़ामी कारवाई न की जाए। चूनांचे ऐसी कारवाई नहीं की गई और सब मुसलमान शेर-ओ-शकर हो गए, मगर क़ातिलान हज़रत उस्मान गनी ﵁ को चुन-चुन कर क़त्ल किया गया और इस पर किसी तरफ़ से इहतिजाज नहीं हुआ, क्योंकि यह तमाम सहाबा की ऐन मर्ज़ी थी।

इन दोनों मुतहारिब फ़रीक़ों के माबैन अमीरुल-मु'मिनीन सैय्यदना हसन ﵁ ने सुल्ह कर के ख़ुद ही फ़ैसला कर दिया कि दोनों हक़ पर थे और उन की जंगें इज्तिहादी ग़लती के सबब बर-पा हुईं। (गुस्ताखो का बुरा अंजाम, पेज 105)

दोनों गिरोह जन्नती

हज़रत उमर बिन शरहजील हमदानी ताबेई रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं कि मैं जंग-ए-सिफ़्फ़ीन में हिस्सा लेने वालों के बारे में मुंतज़िर था कि फ़रीक़ैन (दोनों पक्षों) में से अफ़ज़ल कौन है। मैंने अल्लाह करीम से अर्ज़ किया कि मेरी रहनुमाई फ़रमाए जिससे मेरी तसल्ली हो जाए। मुझे ख़्वाब में दिखाया गया कि मुझे अल-सिफ़्फ़ीन के पास जन्नत में ले जाया गया। मैं हज़रत अली के साथियों के पास पहुँचाया गया जो सब्ज़ बाग़ में और चलती नहरों के पास मौजूद थे। मैंने कहा सुब्हानअल्लाह मैं क्या देख रहा हूँ। आप लोग तो वही हैं जिन्होंने एक दूसरे को क़त्ल किया था। वो कहने लगे हमने अपने रब को रऊफ़ और रहीम पाया। मैंने कहा हज़रत मुआविया के साथियों पर क्या गुज़री? उन्होंने कहा वो तेरे सामने मौजूद हैं। मैं इधर को बढ़ा तो सामने एक क़ौम थी जो सब्ज़ा बाग़ में और चलती नहरों के पास मौजूद थी। मैंने कहा सुब्हानअल्लाह मैं क्या देख रहा हूँ। आप लोग तो वही हैं जिन्होंने एक दूसरे को क़त्ल किया था। उन्होंने कहा हमने अपने रब को रऊफ़ व रहीम पाया (सुनन सईद बिन मन्सूर जिल्द 2)।

मुआविया से कभी जंग ना लड़ता

एक मर्तबा देहाती ने नबी करीम ﷺ से कहा मुझसे कुश्ती लड़ें। हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो पास मौजूद थे। उन्होंने फ़रमाया मैं तुमसे कुश्ती लड़ता हूँ, नबी करीम ﷺ ने दुआ दी कि मुआविया कभी मग़लूब नहीं होगा। हज़रत अमीरे मुआविया ؓ ने उससे कुश्ती लड़ी और उसे पछाड़ दिया। मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो फ़रमाया करते थे कि अगर मुझे यह हदीस याद होती तो मैं मुआविया से कभी जंग ना लड़ता (अल ख़साइसुल कुबरा जिल्द 2)।

बागी गिरोह से हज़रत अली की मुहब्बत

वाज़ेह रहे कि हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो नबी करीम ﷺ के बिरादर-ए-निस्बती (साले) यानी आप ﷺ की ज़ौजाह मुतहरा उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रदियल्लाहु त'आला अन्हा के भाई हैं। हज़रत तल्हा और ज़ुबैर रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा वो जलीलुल क़द्र सहाबी हैं जिनके जन्नती होने की बशारत नबी करीम ﷺ ने दी, ये दोनों हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु त'आला अन्हा के लश्कर में शामिल थे और उनकी शहादत मौला अली के लश्कर के हाथों हुई। अब बताइए, हज़रत अम्मार बिन यासिर की शहादत हज़रत अमीरे मुआविया ؓ के लश्कर के हाथों हुई और हज़रत तल्हा व ज़ुबैर की शहादत मौला अली के लश्कर के हाथों हुई, जबकि शहीद होने वाले उन सब सहाबा के जन्नती होने की गवाही अहादीस में मौजूद है। इस पेचीदा सूरत-ए-हाल का हल आपके पास क्या है? मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने जब हज़रत तल्हा रदियल्लाहु त'आला अन्हो की लाश को देखा तो उनके चेहरे से मिट्टी साफ़ की और फ़रमाया "काश मैं इस वाक़िये से 20 साल पहले फ़ौत हो गया होता" (जामेउल फ़वाइद जिल्द 2, अल बिदाया वन निहाया जिल्द 7)।

मौला अली का यह फ़रमान साफ़ बता रहा है कि मौला अली अपनी फ़ौज को हज़रत तल्हा का क़ातिल समझ रहे थे। नीज़ आप रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने कुछ पढ़कर फ़रमाया कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि तल्हा, ज़ुबैर और मैं उन्हीं लोगों में से होंगे जिनका ज़िक्र इस आयत में है (क़ुरआन की आयत)। आपके इस फ़रमान से भी वाज़ेह हो रहा है कि फ़ौत होने तक उन

हस्तियों के दिलों में एक दूसरे के बारे में रंजिश मौजूद थी। और यही रंजिश क़यामत के दिन ख़त्म कर दी जाएगी।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ भी अपनी ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में फ़रमाया करते थे कि काश मैं ज़ी-तुवा का क़ुरैशी होता और मुझे हुकूमत ही ना मिली होती (अल अकमलुल मा अल मिश्कात)।

इसीलिए मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने जंग-ए-सिफ़्फ़ीन के बाद फ़रमाया था कि मेरी तरफ़ से क़त्ल होने वाले और अमीरे मुआविया ﵁ की तरफ़ से क़त्ल होने वाले सब जन्नती हैं। (तबरानी, मजमाउज़ ज़वाइद जिल्द 9)

अमीरे मुआविया ﵁ से शहंशाह-ए-रुम ख़ौफ़ज़दा हो गया

मौला अली के साथ ग़लतफ़हमी के दिनों में शहंशाह-ए-रुम ने मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए इस्लामी इलाक़े में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) शुरू कर दी, तो हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने रुम के बादशाह को ख़त लिखा कि "अगर तुम अपनी हरकतों से बाज़ ना आए तो मैं अपने चचेरे भाई अली से सुलह कर लूँगा और हम दोनों मिल कर तुम्हें तुम्हारे घर से भी निकाल देंगे और तेरे लिए ज़मीन तंग करके रख देंगे।" शहंशाह-ए-रुम ख़ौफ़ज़दा हो गया और सुलह पर मजबूर हो गया (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8, तारीख़ अल उरूस)।

जब मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो शहीद हुए तो क़त्ल का यह मन्सूबाह (साजिश) तीन अफ़राद के ख़िलाफ़ तैयार किया गया था– हज़रत मौला अली, हज़रत अमर बिन आस और हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हुम। हज़रत अमर बिन आस साफ़ बच गए, अमीरे मुआविया ﵁ ज़ख़्मी हुए और मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो शहीद कर दिए गए (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 7)। इस वाक़िये से पता चलता है कि यह तीनों हस्तियाँ एक जान थीं और उनका दुश्मन मुश्तरक था।

मुझे अल्लाह के हवाले कर दिया जाए

नबी करीम ﷺ ने हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो को एक क़मीज़ पहनाई थी और उनके पास नबी करीम ﷺ की वो क़मीज़,

चादर, नाख़ून और बाल मुबारक भी मौजूद थे। हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने वफ़ात से पहले वसीयत फ़रमाई थी कि मुझे हुज़ूर वाली क़मीज़ का कफ़न पहना कर, आप वाली चादर में लपेट कर, नाख़ून और बाल मुबारक मेरी आँखों और मुँह पर रख दिए जाएँ और मुझे अल्लाह के हवाले कर दिया जाए (अल अकमल फ़ी अस्माउर रिजाल लिल मिश्कात, अस्द उल ग़ाबा जिल्द 4, अल बिदाया वन निहाया)।

नबी करीम ﷺ दुआ मगफिरत

ऐ अल्लाह मुआविया को जन्नत में दाख़िल फ़रमा (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8)।

अमीरे मुआ़विया ﵁ की नदामत और मगफिरत

मशहूर व मारूफ़ ताबेई हज़रत मोहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो की वफ़ात का वक़्त आया तो आप सज्दे में पड़ गए और बारी-बारी अपने रुख़सार (गाल) ज़मीन पर रख कर रोने लगे और दुआ फ़रमाई कि "ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे, मेरी ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा, तू वसीअ मग़्फ़िरत वाला है और ख़ताकारों के लिए तेरे सिवा कहीं पनाह नहीं।" आप अपने घर वालों को तक़्वे की वसीयत करते हुए इस दुनिया से रुख़सत हो गए (अल बिदाया वन निहाया)।

यह सब बातें और ख़सूसन वफ़ात के वक़्त आपकी ज़बान-ए-मुबारक पर 'इत्तक़ुल्लाह' (अल्लाह से डरो) के अल्फ़ाज़ का जारी होना, आप रदियल्लाहु त'आला अन्हो का ख़ात्मा ईमान पर होने की वाज़ेह दलील और मज़बूत क़राइन हैं।

अमीरे मुआ़विया ﵁ की बख़्शिश हो गयी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ताबेई रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में रसूलल्लाह ﷺ की ज़ियारत की, अबू बक्र और उमर आपके पास बैठे हुए थे। मैंने सलाम अर्ज़ किया और बैठ गया। इसी दौरान अली और

मुआविया को बुलाया गया और दोनों को एक कमरे में दाख़िल कर दिया गया और दरवाज़ा बंद कर दिया गया। मैं ग़ौर से देखता रहा। थोड़ी देर में हज़रत अली बाहर तशरीफ़ ले आए और वो फ़रमा रहे थे "रब-ए-काबा की क़सम मेरे हक़ में फ़ैसला हो गया।" फिर थोड़ी देर में हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ भी बाहर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया "रब-ए-काबा की क़सम मेरी बख़्शिश हो गयी" (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8)।

आज के दौर में ख़ारिजियत

ख़ारिजियत सिर्फ़ तारीखी मसला नहीं है, बल्कि आज के दौर में भी कुछ फ़िर्क़े और गिरोह ऐसे हैं जो यही ख़ारिजी सोच रखते हैं और कुरआन का गलत माना के बुनियाद पर तोहमत लगा देते है – जैसे किसी मुस्लिम पर आसानी से 'काफ़िर', 'मुशरिक' का फ़तवा लगाना। जैसा की आज के वहाबी देवबंदी लोग सुन्नी बरैलवीओ पर शिर्क का इल्जाम लगते है जैसे मज़ार जाना और वसीला को शिर्क का फतवा यह सोच उम्मत में तफ़रक़ा और ख़ून-ख़राबा का सबब बनती है।

वहाबी ख़ारजी हैं :- चुनाँचे अल्लामा इब्ने आबेदीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने ज़माना के ख़ारजियों की निशान देही करते हुए तहरीर फ़रमाया कि अब्दुल वहाब नजदी और उसके मुत्तबेईन हमारे जमाने के ख़वारिज हैं आपने दुर्रे मुखतार के हाशिया रद्दुल मुहतार में जो फ्तावा शामी के नाम से मशहूर है तसरीह फरमाते हुए साफ साफ तहरीर प्रमाया कि :-

"जैसा कि हमारे ज़माने में अब्दुल वहाब के मुत्तबेईन के बारे में वाके हुआ है कि यह लोग नज्द से निकले और हरमैन पर ज़बरदस्ती ग़ालिब हो गये। और यह लोग हंबलियों के मज़हब पर अमल करते थे लेकिन उन लोगों का यह अकीदा था कि सिर्फ वही मुसलमान हैं और जो उनके ऐतिकाद के मुखालिफ हैं वह मुरिक हैं। और इसी वजह से उन लोगों ने अहले सुन्नत और उनके उल्मा के कत्ल को मुबाह ठहराया। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने इन लोगों की शौकत को तोड़ दिया और उनके शहरों को बर्बाद फ्रमाया। और मुसलमानों के लश्करों को उन लोगों पर फतह मन्द और गालिब फ्रमाया। यह वाकिआ 1233 हिजरी का है। (जवाहीरुल हदीस, पेज नं. 147, हिन्दी)

बाब 4

बुग़्ज़-ए-मुआविया का अंजाम

इस बाब में सहाबा-ए-किराम में से खास तौर पर हज़रत अमीरे मुआविया ؓ से बुग़्ज़ इंसान को धीरे-धीरे उस सोच की तरफ ले जा सकता है जिसमें सहाबा की तन्क़ीस और तकफ़ीर की जाती है यानी राफ़िज़ीयत की तरफ़ माइल होना|

जिस दिल से सहाबा का अदब निकल जाए, वहाँ दीन की मिठास और सुन्नत की मोहब्बत कमज़ोर होने लगती है| बुज़ुर्गाने दीन ने सहाबा के बारे में हमेशा एहतियात और खैर का रवैया सिखाया|

अमीरे मुआ़विया ؓ को गाली देना नबी को गाली देना है

उलेमा ने तशरीह फ़रमाई है के अहल-ए-बैत अत्हार अलैहिमुर् रिज़वान को दी जाने वाली वो गाली जो नबी करीम ﷺ तक पहुँचेगी उस से मुराद नस्बी गाली है (मिरक़ात जिल्द 1)

अमीरे मुआ़विया ؓ को गाली देने वाला लानती

महबूब-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया यानी मेरी ख़ातिर मेरे सहाबा को और मेरे ससुराल को कुछ ना कहा करो, जिसने उनको गाली दी उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की लानत है (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8)|

नबी करीम ﷺ को गालियाँ देने वाला, तनक़ीस व तौहीन करने वाला, सरीह नाफ़रमानी करने वाला काफ़िर है अगर पहले मुसलमान था तो अब मुर्तद हो जायेगा|

हज़रत अमीरे मुआ़विया ؓ का नसब

आपका नाम मुआविया, कुनियत अबू अब्दुर रहमान है| आप वालिद की तरफ से पाँचवीं पुश्त में और माँ की तरफ से भी पाँचवीं पुश्त में हुज़ूर अनवर ﷺ

से मिल जाते हैं। वालिद की तरफ से नसब यह है: मुआविया (अबू अब्दुर रहमान) बिन सख़्र (अबू सूफियान) बिन हरब बिन उमय्या बिन अब्दु शम्स बिन अब्दु मुनाफ़।

माँ की तरफ से सिलसिला यह है कि मुआविया बिन हिन्द बिन्त उ़तबा बिन रबीआ बिन अब्दु शम्स बिन अब्दु मुनाफ़।

अब्दु मुनाफ़ नबी करीम ﷺ के चौथे दादा हैं, क्योंकि हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दु मुनाफ़ हैं। हज़रत अमीरे मुआविया ؓ अब्दु मुनाफ़ में हुज़ूर से मिल जाते हैं, लिहाज़ा हज़रत अमीरे मुआविया ؓ नसबी लिहाज़ से हुज़ूर ﷺ के क़रीबी अहले-क़राबत में से हैं।

ससुराली रिश्ता

हज़रत अमीरे मुआविया ؓ, नबी करीम ﷺ के हक़ीकी साले हैं क्योंकि उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा बिन्त अबू सूफियान जो हुज़ूर ﷺ की ज़ौजा-ए-मुतह्हराह हैं, वह हज़रत अमीरे मुआविया ؓ की हक़ीकी बहन हैं। इस लिए हज़रत अमीरे मुआविया ؓ हुज़ूर ﷺ के ससुराली रिश्तेदार भी हैं। लिहाज़ा उनका हुज़ूर से दोहरा रिश्ता हुआ: नसबी और ससुराली। मस्नवी शरीफ़ में हज़रत अमीरे मुआविया ؓ को तमाम मोमिनों का मामा फ़रमाया, उसके यही मानी हैं।

बुग़्ज़-ए-मुआविया और ख़वारिज फिरका का वजूद

"ख़वारिज" शब्द "ख़ारिज" से निकला है जिसका शरई माना है "दीन से निकल जाने वाले यानी काफ़िर" ये लोग अव्वलन अली मुरतज़ा के लश्कर के सिपाही और आप के जानिसार थे, आप पर जान व माल क़ुर्बान करते थे। जब हज़रत अली ने हज़रत अमीरे मुआविया ؓ से सुलह फ़रमाई तो ये लोग बुग़्ज़-ए-मुआविया लेकर जोश में हज़रत अली से मुतनफ़्फ़िर (दूर) हो गए और कहने लगे कि अली ने सख़्त ग़लती की कि मुआविया जैसे दुश्मन से सुलह कर ली और ग़ैर-ए-ख़ुदा को हुक्म क़बूल करके शिर्क का इर्तिकाब किया। आख़िरकार ये बुग़्ज़-ए-मुआविया वाले लोग ज़ुल्फ़िकार-ए-हैदरी से क़त्ल हुए।

ख़वारिज ने हज़रत अली से अलग होकर बग़ावत की जिसकी अस्ल वजह बुग़्ज़-ए-मुआविया हुई। यानी जो अमीरे मुआविया ﵁ से बुग़्ज रखता है वा हज़रत अली का मुखालिफ है।

बुग़्ज़-ए-मुआविया और दूसरा गिरोह रवाफ़िज़ (शिआ)

ये मुदअइयान-ए-महब्बत-ए-अली और अहले बैत (हज़रत अली और अहले बैत से मुहब्बत का दावा करने वाले) भी बुग़्ज़-ए-हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की बीमारी में गिरफ़्तार हैं और इस बीमारी का नतीजा ये है कि इन में से अक़्सर हज़रात हज़रत अली की महब्बत में ग़ुलू (हद से ज्यादा) करते है और अहले बैत-ए-अतहार से दरपरदा मुतनफ़्फ़िर (दूर) है।

चनांचे इन में से कुछ 12 इमामों के मानने पर, और कुछ सिर्फ़ 6 के मानने पर, और कुछ सिर्फ़ 3 इमामों के मु'तक़िद होने (मानने) पर मजबूर हैं। वरना महब्बत-ए-अहले बैत का तो तक़ाज़ा ये था कि हुज़ूर के सारे अहले बैत पर ईमान लाया जाए और हुज़ूर के सारे अहले क़राबत पर जान व माल क़ुर्बान किया जाए और हुज़ूर की तमाम अजवाज-ए-पाक, औलाद-ए-पाक पर दिल से फ़िदा हों। ये फ़ेहरिस्त बनाना क्या मानी कि हम तो अहले बैत में सिर्फ़ 12 को या 6 को या 3 को मानेंगे, बाक़ी को नहीं। पता लगा कि बुग़्ज़-ए-मुआविया की बीमारी ने महब्बत-ए-अहले बैत की जगह दिल में छोड़ी ही नहीं।

हम ने गुज़िश्ता ज़माना में शिया हज़रात को ख़ुद देखा था कि मातम में हसन-हुसैन दोनों हज़रात का नाम लेते थे लेकिन मौजूदा मातम में इमाम हसन का नाम शरीफ़ उड़ा दिया गया। फ़ैज़ाबाद के ज़िले में सिर्फ़ अली मौला, हैदर मौला के नाम पर मातम होता है और पंजाब में सीना कूटते वक़्त "या हुसैन या हुसैन" की सदा होती है। आख़िर ये क्यों? सिर्फ़ इस लिये कि हज़रत इमाम हसन ने हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ से सुलह फ़रमा कर उनके हक़ में ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी फ़रमाई थी (यानी हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को खिलाफ़त सौंप दी)। भला कैसे हो सकता था कि बुग़्ज़-ए-मुआविया वाले दिल में इमाम हसन की महब्बत की गुंजाइश रह जाती।

बुग़्ज़-ए-मुआविया और मौलाइयत का वजूद

मौजूद दौर मे हज़रत अमीरे मुआविया को बुरा कहने वाला **"मौलायी फ़िरका"** दरअसल वह गिरोह है जो शिया / राफ़िज़ी सोच से निकलकर पैदा हुआ, लेकिन खुद को "अहले सुन्नत" जैसा दिखाने की कोशिश करता है। इस फ़िरके को अक्सर "मौलायी" भी कहा जाता है। ये अहले सुन्नत से अलग होकर वजूद मे आया।

मौलायी गिरोहों ने राफ़ज़ीयों की तरह हज़रत अली की महब्बत के दावे में हद से बढ़कर हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ पर इल्ज़ाम लगाए, और उन्हें ग़लत ठहराया। जबकि हज़रत मुआविया सहाबी-ए-रसूल हैं। सहाबा की महब्बत ईमान है, और उनसे बुग़्ज़ रखना निफ़ाक़ है।

इसकी पहचान यह है कि ये आला हज़रत के मुखालिफ़ होंगे है और बरेलवियों से शरई इख़्तेलाफ़ रखते है। जहालत के इस दौर मे हिन्दुस्तान में अकसर मौलायत चिश्ती खानकाहो और दरगाह मे मुजावरों से सुन्नी अवाम तक फैल रहा है जो मसलके आला हज़रत पर क़ायम नहीं रहने का अंजाम है।

बुग़्ज़-ए-मुआविया और मसलके आला हज़रत से दूरी

आला हज़रत से बुग़्ज़ रखने वाला वहाबी नहीं तो गुमराह ज़रूर है :
शाने बरकातियत में आला हज़रत, हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन, हुज़ूर हसन मियां मारहरवी रहमतुल्लाह त'आला अलैह का फरमूदा कलिमा मैंने खुद सुना कि जो आला हज़रत को नहीं मानता वह मेरा मुरीद नहीं और जो मेरा मुरीद है उस पर लाज़िम है कि वह आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह त'आला अलैह का मानने वाला हो।

और फरमाया कि जो शख्स आला हज़रत रहमतुल्लाह त'आला अलैह से बुग़्ज़ व इनाद रखता है अगर उस शख्स का तलाश किया जाए तो वह शख्स वहाबी, बद अकीदा होगा। या उस शख्स में कोई न कोई खराबी ज़रूर होगी। (सुन्नी और वहाबी की पहचान, पेज 20)

आज हम देखते है की जो लोग आला हज़रत को हल्के में लेते है या उनसे बुग़्ज रखते है वो मौजूदा दौर में गुमराह, सुहलकुल्ली, राफ़जी, मौलाइ और दुनियादार है यानी हिदायत से खाली है।

मसलके आ'ला हज़रत पे क़ायम रहो
जिन्दगी दी गई हैं इसी के लिए

बुग़्ज़ मुआविया और ईमान का ख़ातिमा

ये उन मौलायी और राफ़जी लोगों की गुफ़्तगू और ऐतराजात है जो अपने को सहीह उल अक़ीदा रासिख उल ऐतिकाद सच्चा और पक्का मुसलमान समझ कर हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के पीछे से मुतनफ़्फ़िर (नफ़रत करने वाला) हैं।

ग़ौर करो कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के बुग़्ज़ की बीमारी किस तरह ईमान का ख़ातिमा कर देती है कि अगर इस में ज़्यादा बहस की जाए तो फिर न सहाबा तअ'न से बचते हैं न अहले बैत।

बल्कि न रसूल अल्लाह ﷺ की अज़मत दिल में रहती है न कुरआन ए करीम का वक़ार।

बाब 5

हक़ जमात कौन? : इस बाब में हक़ जमाअत की पहचान और उसकी अलामत का बयान है ताकि लोग उनके साथ हो जाये और गुमराह जमात या तंजीम को छोड़ दे |

हज़रत अमीरे मुआविया ؓ ख़ुसूसी फ़ज़ाइल

हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो हुदैबिया से अगले साल यानी 7 हिजरी में मुसलमान हुए| नबी करीम ﷺ के सर मुबारक के बाल काटने का शर्फ़ हासिल किया| आपकी हमशीरा (बहन) हज़रत उम्मे हबीबा रदियल्लाहु त'आला अन्हा तमाम मोमिनीन की माँ और महबूब-ए-करीम ﷺ की ज़ौजाह मुतहरा हैं| उनकी हमशीरा हज़रत मैमूना रदियल्लाहु त'आला अन्हा, सैय्यदना इमाम-ए-हुसैन रदियल्लाहु त'आला अन्हो की सास हैं| आपने इस्लाम लाने से पहले मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी जंग में हिस्सा नहीं लिया| सबसे पहला बहरी बेड़ा (Naval Fleet) तैयार कराया| चालीस साल तक मसनद-ए-इक़्तेदार (सत्ता) पर फ़ाइज़ रहे|

बुख़ारी शरीफ़ में फ़ज़ाइल

आपने नबी करीम ﷺ से 163 अहादीस रिवायत फ़रमाई हैं जिनमें से बाज़ सही बुख़ारी जैसी किताबों में मौजूद हैं| चुनाँचे एक ज़बरदस्त हदीस जो इश्क़ के मज़हब व मश्लक की जान है, यानी 'अल्लाह देता है और मैं तक़सीम करता हूँ', उसके रावी हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो हैं| (बुख़ारी जिल्द 1)

अमीरे मुआविया ؓ फ़क़ीह

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया जिसने मेरी 40 अहादीस मेरी उम्मत तक पहुँचाईं, अल्लाह त'आला उसे फ़क़ीह बना कर उठाएगा और मैं क़यामत के दिन उसकी शफ़ाअत करूँगा और उसके हक़ में गवाही दूँगा (मिश्कात शरीफ़)| हज़रत सैय्यदना अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो

बज़ात-ए-ख़ुद सहाबी और फ़क़ीह हैं। और इस हदीस की रौशनी में फ़क़ीह के दर्जे को पहुँचाने वाली 40 अहादीस से चार गुना ज़्यादा अहादीस के रावी हैं। यह मर्तबा बुलंद जिसको मिल गया।

अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ भी मुसलमान गिरोह से है

सही बुख़ारी में हदीस है के हबीब-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया मेरा बेटा हसन मेरी उम्मत का सरदार है और एक वक़्त आएगा के अल्लाह त'आला उस के ज़रियेह मुसलमानों के दो बड़े-बड़े गिरोह में सुलह कराएगा। (बुख़ारी जिल्द 1)

इस हदीस में जिन दो गिरोह का ज़िक्र है उनमें से एक गिरोह इमाम हसन का और दूसरा गिरोह हज़रत अमीरे मुआविया رضی اللہ عنہ रदियल्लाहु त'आला अन्हो का है। उन दोनों में सुलह उस वक़्त हुई थी जब मौला अली और अमीरे मुआविया رضی اللہ عنہ रदियल्लाहु त'आला अन्हा के दरमियान जंग हो चुकी थी और हज़रत अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु त'आला अन्हा शहीद हो चुके थे। इस शहादत के वाक़ेह हो जाने के बावजूद, महबूब-ए-करीम ﷺ ने शहीद करने वालों को मुसलमान गिरोह कहा है।

अमीरे मुआ़विया رضی اللہ عنہ जन्नती है

सही बुख़ारी में एक और हदीस इस तरह है के यानी मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो समंदर पर जिहाद करेगा उन पर जन्नत वाजिब हो चुकी है (बुख़ारी जिल्द 1)।

सबसे पहले समंदर पर जिहाद करने वाले हज़रत अमीरे मुआविया رضی اللہ عنہ हैं रदियल्लाहु त'आला अन्हो और इस हदीस में उनकी वाज़ेह और ज़बरदस्त मन्क़बत मौजूद है। (हाशिया बुख़ारी जिल्द 1)

लुत्फ़ की बात यह है के ख़ारजी हज़रत इसी हदीस के अगले अल्फ़ाज़ से यज़ीद का मग़फ़ूर (बख़्शा हुआ) होना साबित करते हैं और रफ़ज़ी हज़रत हज़रत अमीरे मुआविया رضی اللہ عنہ रदियल्लाहु त'आला अन्हो के जन्नती होने के भी मुनकिर (विरोधी) हैं। यह दोनों इंतहापसंद टोले हैं जबकि अहल-ए-सुन्नत का

मश्लक उनके बैन-बैन (बीच का) है और राह-ए-एतदाल (संतुलन का रास्ता) का आईनादार है।

मुल्के अमीरे मुआ़विया ﷺ के लिए दुआ

हबीब-ए-करीम ﷺ ने एक मर्तबा दुआ फ़रमाई यानी ऐ अल्लाह हमारे शाम में बरकत दे और हमारे यमन में बरकत दे। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह नजद के लिए भी दुआ फ़रमाएँ। आप ﷺ ने फिर वही दुआ फ़रमाई मगर नजद के लिए दुआ ना फ़रमाई। तीन बार ऐसा ही हुआ। हर बार सहाबा-ए-किराम ने नजद के लिए दुआ करने की दरख़्वास्त की। आखिरकार आप ﷺ ने फ़रमाया यानी नजद में ज़लज़ले और फ़ितने होंगे और वहाँ से शैतान का गिरोह निकलेगा (बुख़ारी)।

इस हदीस में नजद के ख़ारजियों की वजह से नबी करीम ﷺ ने नजद के लिए दुआ फ़रमाने से इनकार कर दिया। अगर हज़रत अमीरे मुआविया رضي الله عنه रदियल्लाहु त'आला अन्हो भी ख़ारजी या ग़लत आदमी होते तो आप ﷺ शाम के लिए भी दुआ ना फ़रमाते। आप ﷺ का यमन और शाम दोनों के लिए दुआ फ़रमाना इस बात का सबूत है के यमनी और शामी नबी करीम ﷺ के नज़दीक नजदियों की तरह नापसंद नहीं थे।

अमीरे मुआ़विया ﷺ सहाबी हैं

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो फ़रमाते हैं के मुआविया को कुछ ना कहो, वो रसूलल्लाह ﷺ के सहाबी हैं।(बुख़ारी जिल्द 1)

अमीरे मुआ़विया ﷺ अमीरुल मोमिनीन है

सैय्यदना इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा से किसी ने पूछा के अमीरुल मोमिनीन मुआविया का क्या करें वो सिर्फ़ एक वित्र पढ़ते हैं। आपने फ़रमाया वो अपने तौर पर ठीक करता है, अमीरे मुआविया رضي الله عنه फ़क़ीह हैं (बुख़ारी, जिल्द 1)।

इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने यह बात उस वक़्त फ़रमाई जब जंग-ए-सिफ़्फ़ीन हो चुकी थी, हज़रत अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु

त'आला अन्हो शहीद हो चुके थे बल्कि मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो का दौर-ए-ख़िलाफ़त भी गुज़र चुका था। यह सारी बातें अमीरुल मोमिनीन के लफ़्ज़ से ज़ाहिर हो रही हैं। इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो के सामने हज़रत मुआविया को अमीरुल मोमिनीन कहा गया और आपने उसकी तरदीद (खंडन) करने की बजाय उन्हें फ़क़ीह कह दिया। बताइए सैय्यदना इब्ने अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो के बारे में आपका क्या फ़तवा है जो हबीब-ए-करीम ﷺ के ख़ानदान-ए-अक़्दस के फ़र्द-ए-अज़ीम (महान सदस्य) हैं।

हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने नबी करीम ﷺ के बाल मुबारक काटने का शर्फ़ हासिल किया (बुख़ारी जिल्द 1)।

मुस्लिम शरीफ़ में फ़ज़ाइल

हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं आपसे तीन चीज़ें माँगता हूँ, आप मुझे अता फ़रमा दें। फ़रमाया क्या माँगते हो? अर्ज़ किया मेरे पास अरब की सबसे हसीन व जमील बेटी उम्मे हबीबा मौजूद हैं, मैं उसे आपके निकाह में देता हूँ। फ़रमाया ठीक है।

अर्ज़ किया आप मुआविया को अपना कातिब (Writer) बना लें। फ़रमाया ठीक है। अर्ज़ किया आप मुझे इमारत (नेतृत्व) सौंप दें ताकि मैं जिस तरह मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग करता रहा हूँ अब मुशरिकीन के ख़िलाफ़ जंग करके बदला मोड़ सकूँ। फ़रमाया ठीक है। (मुस्लिम जिल्द 2, सहीह इब्ने हिब्बान)

इस वाक़िये से पहले हज़रत उम्मे हबीबा रदियल्लाहु त'आला अन्हा का निकाह नबी करीम ﷺ से हो चुका था। हज़रत अबू सुफ़ियान रदियल्लाहु त'आला अन्हो अपने मुसलमान होने के बाद इसी निकाह की तजदीद (नवीनीकरण) और उस पर अपने क़ल्बी इत्मीनान की बात कर रहे थे। (शरह नववी जिल्द 2)

तिर्मिज़ी शरीफ़ में फ़ज़ाइल

नबी करीम ﷺ ने हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो के बारे में फ़रमाया कि ऐ अल्लाह उसे हिदायत देने वाला और हिदायत याफ़्ता (Guidance पाने वाला) बना दे। (तिर्मिज़ी जिल्द 2)

ऐ अल्लाह उस के ज़रियेह लोगों को हिदायत दे (तिर्मिज़ी जिल्द 2)।

मुआविया को अच्छे लफ़्ज़ों से याद करो

सैय्यदना फ़ारूक़-ए-आज़म रदियल्लाहु त'आला अन्हो फ़रमाते हैं कि मुआविया को हमेशा अच्छे लफ़्ज़ों से याद किया करो। मैंने रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना है कि ऐ अल्लाह उसे हिदायत दे (तिर्मिज़ी जिल्द 2 सफ़ाह 224, अल बिदाया वन निहाया जिल्द 9 सफ़ाह 129)।

मुस्नद अहमद में फ़ज़ाइल

ऐ अल्लाह मुआविया को किताब और हिसाब सिखा और उसे आग से बचा (मुस्नद अहमद जिल्द 4, सहीह इब्ने हिब्बान)।

हदीस ख़ुद मुआविया से हम तक पहुँचती है

हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने सफ़ा और मरवा के दरमियान सई करने के बाद मरवा के पास नबी करीम ﷺ के बाल मुबारक काटे। यह हदीस मुस्नद इमाम अहमद में कई सनदों के साथ रिवायत की गयी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु त'आला अन्हो इसके रावी हैं। जब आपने यह हदीस बयान फ़रमाई तो लोगों ने पूछा कि यह हदीस ख़ुद मुआविया से हम तक पहुँचती है। आप रदियल्लाहु त'आला ने फ़रमाया के मुआविया रसूलल्लाह ﷺ पर बोहतान (झूठा आरोप) बाँधने वाला आदमी नहीं था। (मुस्नद अहमद जिल्द 4)

सुनन सईद बिन मन्सूर में फ़ज़ाइल

हज़रत नईम बिन अबी हिन्दा अपने चचा से रिवायत करते हैं कि मैं जंग-ए-सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली का साथी था। जब नमाज़ का वक़्त आया तो हमने भी अज़ान दी और अमीरे मुआविया ﵁ के लश्कर ने भी अज़ान दी। हमने इक़ामत पढ़ी उन्होंने भी इक़ामत पढ़ी। हमने भी नमाज़ पढ़ी उन्होंने भी नमाज़ पढ़ी। मैंने दोनों तरफ़ से क़त्ल होने वालों के बारे में सोचा। जब मौला अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने सलाम फेरा तो मैंने अर्ज़ किया कि हमारी तरफ़ से क़त्ल होने वालों और उनकी तरफ़ से क़त्ल होने वालों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? फ़रमाया ख़्वाह कोई हमारी तरफ़ से मारा गया या उनकी तरफ़ से मारा गया हो, अगर उस की नीयत अल्लाह की रज़ा और जन्नत की तलब थी तो वो जन्नत में गया (सुनन सईद बिन मन्सूर)।

दीगर कुतुब (अन्य किताबों) में फ़ज़ाइल

नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया ऐ मुआविया जब आपको हुकूमत मिले तो अल्लाह से डरना। हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर करीम ﷺ के इस इरशाद के बाद मुझे यक़ीन हो गया कि मैं हुक्मरानी में मुब्तला किया जाऊँगा (मुस्नद अहमद जिल्द 4, मुस्नद-ए-अबी यअला जिल्द 5, अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8, मजमूआ अज़-ज़वाइद जिल्द 9, दलाइलुन नुबुव्वह लिल बैहक़ी जिल्द 6)।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ महबूब थे

अल्लाह और उसका रसूल मुआविया से मोहब्बत करते हैं (ततहीरुल जनान सफ़ाह 14)।

हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ कातिब-ए-वही थे।

नबी करीम ﷺ ने हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से मशवरा लिया कि मुआविया को कातिब-ए-वही बनाया जाए या नहीं। हज़रत जिब्राईल ने अर्ज़

किया उससे किताबत करवाया करें वो अमीन (विश्वसनीय) है (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8)।

नबी करीम ﷺ की दुआ

इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाही अलैह ने अपनी तारीख़ में हज़रत वहशी रदियल्लाहु त'आला अन्हो से रिवायत किया है कि एक मर्तबा हज़रत मुआविया रदियल्लाहु त'आला अन्हो नबी करीम ﷺ के पीछे सवारी पर बैठे हुए थे। आप रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने पूछा ऐ मुआविया तेरे जिस्म का कौन सा हिस्सा मेरे क़रीब है? अर्ज़ किया मेरा पेट। आप ﷺ ने फ़रमाया ऐ अल्लाह उसे इल्म व हिल्म से भर दे (अल ख़साइसुल कुबरा जिल्द 2)।

हज़रत अमीर मुआविया हलीम और सख़ी

मुआविया मेरी उम्मत का सबसे हलीम और सख़ी (दानी) आदमी है (ततहीरुल जनान सफ़ाह 12)।

हिकायाते सखावत

हज़रत अमीरे मुआविया ؓ निहायत नेक दिल, सख़ी, बहुत हलीम ओ करीम थे जैसा कि उनके मुतअल्लिक़ नबी करीम ने ख़बर दी थी। चुनाँचा आप की सख़ावत हसब-ए-ज़ैल वाक़ियात से ज़ाहिर होती है।

I : मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात शर्ह मिश्क़ात में फ़रमाया कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया ؓ ने इमाम हसन को चार लाख रुपय नज़राना पेश किया जो इमाम हसन रदीअल्लाहु अन्हु ने क़ुबूल फ़रमाया। (किताब-उन-नाहियह)

ii: हाकिम ने ब रिवायत हिशाम बिन मुहम्मद रिवायत की कि हज़रत अमीरे मुआविया ؓ ने इमाम हसन के लिये एक लाख रुपय सालाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया था। इत्तिफ़ाक़न एक साल ये वज़ीफ़ा इमाम हसन को न पहुँचा। आप ने चाहा कि हज़रत अमीरे मुआविया ؓ को याद-दहानी के लिये ख़त लिखें, नबी ﷺ ने ख़्वाब में इमाम हसन को फ़रमाया कि अपनी जै रब से अर्ज़ करो और फ़रमाया ये दुआ पढ़ो:

اللّٰهُمَّ اقْذِفْ فِي قَلْبِي رِجَاءَكَ وَاقْطَعْ رِجَاءِ عَنَّنْ سِوَاكَ حَتَّى لَا أَرْجُوا أَحَدًا غَيْرَكَ اللّٰهُمَّ وَمَا ضَعُفَتْ عَنْهُ قُوَّتِي وَقَصَرَ عَنْهُ عَمَلِي وَكَمْ تَنْتَهِ إِلَيْهِ رَغْبَتِي وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْأَلَتِي وَلَمْ يَجْرِ عَلَى لِسَانِي مِمَّا أَعْطَيْتُ مِنَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ مِنَ الْيَقِينِ فَخَصِّينِي بِهِ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ.

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मेरे दिल में अपनी उम्मीद भर दे और अपने मा सिवा से उम्मीद मुनक़ति' फ़रमा दे यहाँ तक कि तेरे सिवा किसी से उम्मीद न रखूँ। ऐ अल्लाह जिस चीज़ से मेरी ताक़त कमज़ोर है और मेरे अमल कोताह हैं और मेरी रग़बत वहाँ तक न पहुँची और मेरी ज़ुबान पर जारी न हुआ जो कि तू ने अगलों और पिछलों को यक़ीन अता फ़रमाया है पस मुझे उस से ख़ास कर ऐ जहाँनों के पालने वाले।

चुनाँचे ये वज़ीफ़ा इमाम हसन रदीअल्लाहु अन्हु ने शुरू कर दिया। अभी एक हफ़्ता न गुज़रा था कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने पन्द्रह लाख रुपये भेज दिया, यानी दो लाख वज़ीफ़ा और तेरह लाख नज़राना (नाहिया वग़ैरह)।

मुसलमान ये दुआ याद कर लें, रफ़्अ-ए-हाजत के लिये बेहतरीन दुआ है।

iii: एक बार हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने हाज़िरीन से फ़रमाया कि जो कोई अली ﵁ की शान में क़सीदा पढ़े तो मैं उसे फ़ी शेर एक हज़ार दीनार दूँगा। चुनाँचे हाज़िरीन शुआरा ने अश्आर पढ़े और इनाम लिया। हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ हर शेर पर कहते थे कि अली ﵁ इस से भी अफ़ज़ल हैं। उमर व इब्ने आस शायर ने एक क़सीदा अली मुर्तज़ा की शान में पढ़ा जिसका एक शेर ये था:

هُوَ النَّبَاءُ الْعَظِيمُ وَفُلْكُ نُوحٍ وَبَابُ اللّٰهِ وَانْقَطَعَ الْخِطَابُ

हज़रत अली बड़ी ख़बर वाले हैं। नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती हैं। अल्लाह का दरवाज़ा हैं। उनके बग़ैर अल्लाह से कोई कलाम नहीं कर सकता। हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने इस शेर पर उस शायर को सात हज़ार दीनार दिए। (नक़ा'इस अल-फुनून मुसन्निफ़ा मुहम्मद इब्न महमूद आमुली अज़ किताब अल-नाहिय:)

इब्ने आसाक़िर ने रिवायत की के जंग के ज़माने में हज़रत अ़क़ील ने (हज़रत अली के भाई) अली रदीअल्लाहु अन्हु से कहा मुझे कुछ रुपए की ज़रूरत है दीजिए। फ़रमाया अभी नहीं है। आपने अर्ज़ किया के मुझे इजाज़त दीजिए के हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के पास चला जाऊँ। हज़रत अली ने फ़रमाया जाओ। हज़रत अ़क़ील हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ के पास पहुँचे। हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ ने आपका बड़ा एहतराम किया और एक लाख रुपए नज़राना पेश किया। (सवाइक़ मुहर्रिक़ा)

ये नमूना के तौर पर चंद वाक़िआत पेश किए गए वरना हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की बेमिस्ल सख़ावत के वाक़िआत बहुत हैं।

मुहद्दिसीन के अक़्वाल

मुहद्दिसीन अलैहिर्रहमा ने अपनी-अपनी हदीस की किताबों में 'फ़ज़ाइल-ए-मुआविया' और 'ज़िक्र-ए-मुआविया' के नाम से बाब (Chapter) क़ायम फ़रमाए हैं जिनमें से बहुत सी अहादीस आप गुज़िश्ता सफ़हात (पिछले पन्नों) में पढ़ चुके हैं।

इमाम अहमद बिन हम्बल अलैहिर्रहमा से किसी ने मौला अली और हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो के बारे में पूछा तो आपने जवाब में यह आयत तिलावत फ़रमाई, जिसका तर्जुमा है: "यह एक उम्मत है जो गुज़र चुकी, जो उन्होंने कमाया वो उनके लिए है और जो तुमने कमाया वो तुम्हारे लिए है। उनके आमाल के बारे में तुमसे सवाल नहीं किया जाएगा।" (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8)

हज़रत शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस-ए-देहलवी रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं: इमाम हसन रदियल्लाहु त'आला अन्हो का अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो से सुलह फ़रमाना अमीरे मुआविया ؓ की इमारात (सल्तनत) के सही होने का सबूत है। (अशअतुल लम्हात जिल्द 4)

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं: पुराने बुज़ुर्गों ने उन जंगों के बारे में ख़ामोश रहने को पसंद फ़रमाया है और नसीहत की है कि–"जिन लोगों के ख़ून से अल्लाह त'आला ने हमारे हाथों को पाक रखा, उनकी ग़ीबत करके हम अपनी ज़बान को नापाक क्यों करें।(मिरक़ातजिल्द 1)

अल्लामा इब्ने हज्र मक्की रहमतुल्लाही अलैह ने एक मुकम्मल किताब हज़रत अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हो की शान में लिखी है जिसका नाम 'ततहीरुल जनान' है।

अल्लामा इब्ने हज्र अस्क़लानी ने फ़तहूल बारी में, अल्लामा क़स्तलानी ने इरशादुल सारी में, अल्लामा किरमानी ने शरह किरमानी में और बेशुमार मुहद्दिसीन ने अपनी-अपनी कुतुब में अमीरे मुआविया ؓ रदियल्लाहु त'आला अन्हo की शान बयान फ़रमाई है और उन पर ज़बान-दराज़ी से मना फ़रमाया है।

सूफ़ीया के अक़्वाल

इससे पहले 1. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का ख़्वाब और 2. हज़रत उमर बिन शरहजील हमदानी रहमतुल्लाही अलैह का वाक़िया बयान हो चुका है।

अब्दुल अज़ीज़ से अफ़ज़ल है।" : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक़ रहमतुल्लाही अलैह से किसी ने पूछा कि हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ अफ़ज़ल हैं या हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़? आपने फ़रमाया कि "अमीरे मुआविया ﵁ के घोड़े की नाक में जमने वाली मिट्टी भी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से अफ़ज़ल है।" (अल बिदाया वन निहाया)

इमाम हसन और हुसैन के खादिम : हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो सारी ज़िंदगी सैय्यदना इमाम हसन और सैय्यदना इमाम हुसैन रदियल्लाहु त'आला अन्हुमा की ख़िदमत में वज़ीफ़ा (सम्मान राशि) पेश करते रहे और यह दोनों शहज़ादे बाख़ुशी उसे क़बूल फ़रमाते रहे।

हिकायत : हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाही अलैह लिखते हैं कि सैय्यदना इमाम-ए-हुसैन रदियल्लाहु त'आला अन्हो के पास एक ज़रूरतमंद अपनी हाजत लेकर हाज़िर हुआ। आपने फ़रमाया बैठ जाओ हमारा रिज़्क़ रास्ते में है। थोड़ी देर में दीनार की 5 थैलियाँ हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की तरफ़ से पहुँच गयीं। हर थैली में एक हज़ार दीनार थे। क़ासिद (संदेशवाहक) ने अर्ज़ किया कि अमीरे मुआविया ﵁ देर से वज़ीफ़ा पेश करने पर माज़रत (क्षमा) कर रहे थे। आपने रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने वो पाँचों थैलियाँ ज़रूरतमंद को दे दीं और इतनी देर बिठाए रखने पर माज़रत चाही (कश्फ़ुल महजूब सफ़ाह 77)।

सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार करो : हुज़ूर सैय्यदना ग़ौस-ए-आज़म रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं: रहा अमीरे मुआविया ﵁ और हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रदियल्लाहु त'आला अन्हुम का मामला, तो वो भी हक़ पर थे इसलिए कि वो ख़लीफ़ा-ए-मज़लूम (हज़रत उस्मान) के ख़ून का बदला लेना चाहते थे। और क़ातिल हज़रत अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो के लश्कर में मौजूद थे। पस हर फ़रीक़ (पक्ष) के पास जंग के जवाज़ (वैधता) की एक वजह

मौजूद थी। लिहाज़ा हमारे लिए सुकूत (ख़ामोशी) इस सिलसिले में सबसे अच्छी बात है, उनके मामले को अल्लाह की तरफ़ लौटा देना चाहिए। वो सबसे बड़ा हाकिम और बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। हमारा काम तो यह है कि हम अपने अयूब (कमियों) पर नज़र डालें और दिलों को गुनाहों की चीज़ों से और अपनी ज़ाहिरी हालतों को तबाही अंगेज़ कामों से पाक और साफ़ रखें। (ग़ुन्यतुत तालिबीन सफ़ाह 186)

शैतान पर गालिब : हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाही अलैह ने मसनवी शरीफ़ में हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो का निहायत ईमान अफ़रोज़ वाक़िया शेरों में लिखा है। वो फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा शैतान ने हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ को नमाज़ के वक़्त थपकियाँ देकर सुला दिया। जब वो जागे तो नमाज़ का वक़्त गुज़र चुका था। आप नमाज़ के क़ज़ा होने पर सख़्त रोए और पशेमान (शर्मिंदा) हुए। दूसरे दिन शैतान ने उन्हें बवक़्त जगा दिया। आपने अजनबी शैतान से पूछा कि तुम तो लोगों को ग़ाफ़िल करने पर लगे हो, आज तुमने मुझे नमाज़ के लिए कैसे जगा दिया? शैतान ने कहा कल नमाज़ के क़ज़ा होने पर आप इतना रोए और पशेमान हुए कि अल्लाह ने आपको नमाज़ पढ़ने से भी ज़्यादा अज़र दे दिया। आपको मिलने वाला अज़र देख कर मैंने सोचा कि आपको ग़ाफ़िल करने से बेहतर है कि आप नमाज़ ही पढ़ लें।

इसके लिए मौलाना रूम अलैहिर्रहमा ने यह उनवान (Heading) क़ायम किया है: 'बेदार क रदन-ए-इब्लीस हज़रत अमीरुल मोमिनीन मुआविया रा ब-वक़्त-ए-नमाज़ अस्त' यानी इब्लीस का अमीरुल मोमिनीन मुआविया को जगाना कि उठो नमाज़ का वक़्त है (मसनवी मअनवी मौलाना रूम, दफ़्तर दोम)।

एक अल्लाह के वली ने ख़्वाब में रसूलल्लाह ﷺ की ज़ियारत की। आप ﷺ के पास अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली और मुआविया मौजूद थे। राशिद अल-कुन्दी नामी एक शख़्स आया। हज़रत उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह यह शख़्स हम में नुक़्स (कमियाँ) निकालता है। कुन्दी ने कहा या रसूलल्लाह मैं उन सब में ऐब नहीं निकालता बल्कि सिर्फ़ एक में ऐब निकालता हूँ। उसने हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ की तरफ़ इशारा

करते हुए यह बात कही। रसूलल्लाह ﷺ ने एक नेज़ा (भाला) पकड़ा और मुआविया को दे दिया और फ़रमाया यह इसके सीने में मारो। उन्होंने उसे नेज़ा मार दिया। (अल बिदाया वन निहाया जिल्द 8)

ना काफ़िर हैं ना फ़ासिक़ : हज़रत मुजद्दिद-ए-अल्फ़-ए-सानी शेख़ अहमद सरहिंदी रहमतुल्लाही अलैह फ़रमाते हैं: हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो से मन्कूल है कि उन्होंने फ़रमाया है कि "हम से बग़ावत करने वाले हमारे भाई हैं। यह लोग ना काफ़िर हैं ना फ़ासिक़।" क्योंकि उनके पास तावील मौजूद है जो उन्हें काफ़िर और फ़ासिक़ कहने से रोकती है। अहल-ए-सुन्नत और रफ़ज़ी दोनों हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो के साथ लड़ाई करने वालों को ख़ता पर समझते हैं, लेकिन अहल-ए-सुन्नत हज़रत अमीर से जंग करने वालों के हक़ में महज़ 'ख़ता' के लफ़्ज़ से ज़्यादा सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं समझते और ज़बान को उनके तअन व तश्नीअ (बुराई) से बचाते हैं और हज़रत ख़ैरुल बशर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का सहाबी होने का हया करते हैं (मक्तूबात-ए-इमाम-ए-रब्बानी जिल्द 2)।

ज़बान को लगाम : इमाम अब्दुल वहाब शेरानी रहमतुल्लाही अलैह एक अज़ीम तरीन सूफ़ी बुज़ुर्ग हैं और हुज़ूर-ए-शेख़-ए-अकबर मोहिउद्दीन इब्न-ए-अरबी क़ुद्दिसा सिर्रहू के नज़रियों के ज़बरदस्त प्रचारक हैं, आपने अपनी शोहरा-ए-आफ़ाक़ किताब 'अल-यवाक़ीत वल-जवाहिर' में एक सुर्ख़ी (Heading) क़ायम फ़रमाई है। वो सुर्ख़ी यह है– "सहाबा के बाहमी झगड़ों के बारे में ज़बान को लगाम देना वाजिब है और उन सब के माज़ूर (विवश/क्षमा योग्य) होने का एतक़ाद वाजिब है।"

इस उनवान के तहत आपने ज़बरदस्त बहस फ़रमाई है। चुनाँचे फ़रमाते हैं कि इस मौज़ू पर बाज़ तारीख़ दानों की ख़िलाफ़-ए-तहक़ीक़ बातों पर कान नहीं धरना चाहिए और तारीख़ पढ़ते वक़्त सहाबा-ए-किराम अलैहिर्रिज़वान के मर्तबे और मुक़ाम को मल्हूज़ (ध्यान में) रखना चाहिए। इसलिए कि सहाबा का मर्तबा क़ुरआन व सुन्नत से साबित है जबकि तारीख़ महज़ कच्ची-पक्की बातों का मजमूआ है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने ख़ूब फ़रमाया है कि यानी अल्लाह त'आला ने सहाबा के ख़ून से

हमारी तलवारों को बचा लिया है तो हम अपनी ज़बानों को उनकी ग़ीबत करके क्यों गुनहगार करें। यही तो वो लोग हैं जिन्होंने दीन अपने कंधों पर लादा और हम तक पहुँचाया। हमें नबी करीम ﷺ की तरफ़ से एक लफ़्ज़ भी अगर पहुँचा है तो उन्हीं के वास्ते से पहुँचा है। लिहाज़ा जिस सहाबी पर तअन (आरोप) किया उसने अपने दीन पर तअन किया। सहाबा-ए-किराम और अहल-ए-बेत अत्हार के दरमियान होने वाली ग़लतफ़हमी का मामला निहायत नाज़ुक और दक़ीक़ (गहरा) है। इसमें रसूलल्लाह ﷺ के बग़ैर कोई शख़्स फ़ैसला देने की जुर्रत ना करे। इसलिए कि यह मसला हुज़ूर की औलाद और हुज़ूर के सहाबा का है।

जंग का बारे मे सही अकाईद : कमालुद्दीन बिन अबी शरीफ़ रहमतुल्लाही अलैह के हवाले से लिखते हैं कि—यानी अली और मुआविया के दरमियान जो बिरादराना झगड़ा हुआ उससे मुराद हुकूमत की ख़ातिर जंग लड़ना नहीं है जैसा कि बाज़ शियों को वहम हुआ है। यह झगड़ा महज़ इस बात का था कि उस्मान रदियल्लाहु त'आला अन्हो के क़ातिलों को उनके रिश्तेदारों के हवाले कर दिया जाए ताकि वो क़िसास (बदला) ले सकें। अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो की राय यह थी कि उनको गिरफ़्तार करने में ताख़ीर (देरी) करना बेहतर है। इसलिए कि उनकी तादाद बहुत ज़्यादा थी और वो हज़रत अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो के लश्कर में मख़लूत (शामिल) हो चुके थे। ऐसी सूरत-ए-हाल में क़ातिलों को गिरफ़्तार करना हुकूमत को हिला कर रख देने के मुतरादिफ़ (बराबर) था, इसलिए कि जंग-ए-जमल के दिन जब सैय्यदना अली रदियल्लाहु त'आला अन्हो ने सैय्यदना उस्मान रदियल्लाहु त'आला अन्हो के क़ातिलों को फ़ौज से निकल जाने का हुक्म दिया था तो उनमें से बाज़ ज़ालिमों ने इमाम अली के ख़िलाफ़ ख़ुरूज (बग़ावत) करने और उन्हें क़त्ल करने का अज़्म (इरादा) कर लिया था। उसके बरअक्स हज़रत अमीरे मुआविया ﵁ रदियल्लाहु त'आला अन्हो की राय यह थी कि क़ातिलों को फ़ौरन गिरफ़्तार करना चाहिए। अब यह दोनों हस्तियाँ मुज्तहिद हैं और दोनों को अज़र मिलेगा (अल-यवाक़ीत वल-जवाहिर जिल्द 2)।

हज़रत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ परहारवी रहमतुल्लाही अलैह के पास इल्म-ए-लदुन्नी था। आप किसी उस्ताद के पास नहीं पढ़े थे। आपने हज़रत अमीरे मुआविया ﷛ रदियल्लाहु त'आला अन्हो की शान में एक मुकम्मल रिसाला तस्नीफ़ फ़रमाया है जिसका नाम है "नाहिया अन ज़म्म-ए-मुआविया"।

हमने अशरा कामिला (मुकम्मल दर्ज़) के तौर पर 10 औलिया-ए-किराम के हवाले नुक़ल कर दिए हैं। अगर यह तमाम औलिया अलैहिमुर् रिज़वान हज़रत अमीरे मुआविया ﷛ रदियल्लाहु त'आला अन्हो का एहतराम करने की वजह से जहन्नम में जाएँगे तो फिर आपको वो जन्नत मुबारक हो जो औलिया की दुश्मनी के नतीजे में मिला करती है।

अक़ायदे की कुतुब में तालीम

अक़ायदे की तमाम किताबों में हज़रत अमीरे मुआविया ﷺ रदियल्लाहु त'आला अन्हो के बारे में ज़बान को लगाम देने पर ज़ोर दिया गया है (शरह अक़ाइद नस्फ़ी सफ़ाह 63, फ़िक़्ह-ए-अकबर सफ़ाह 65, नीज़ इसके सफ़ाह 307, अल-यवाक़ीत वल-जवाहिर जिल्द 2)।

फ़ाज़िल-ए-बरेली (इमाम अहमद रज़ा) अलैहिर्रहमा ने मसाइल-ए-कलामिया में लिखा है कि अमीरे मुआविया ﷺ रदियल्लाहु त'आला अन्हो अजल (महान) सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाही त'आला अलैहिम से हैं, नसीमुर रियाज़ के हवाले से लिखते हैं–"जो अमीरे मुआविया ﷺ रदियल्लाहु त'आला अन्हो पर तअन करे वो जहन्नम के कुत्तों में से एक कुत्ता है।" (फ़तावा रज़विया जिल्द 9 सफ़ाह 62)

अहले सुन्नत व जमात ही जन्नती फिरका है

हजरते इब्ने उमर रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल 72 मज़हबो में बट गए थे और मेरी उम्मत 73 मज़हबो में बट जाएगी उनमें एक मजहब वालों के सिवा बाकी तमाम मज़ाहिब वाले नारी और जहन्नमी होंगे सहाबा ए किराम ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वोह एक मजहब वाले कौन है तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह लोग इसी मज़हबो मिल्लत पर कायम रहेंगे जिस पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं (तिर्मिजी, हदीस नं 171, अबू दाऊद, हदीस नं 4579, इन्ने माजा, सफह 287)

अहले-सुन्नत का यह अकीदा है:

“हज़रत मुआविया ﷺ सहाबी हैं। उनके खिलाफ़ जबान चलाना जाइज़ नहीं। उनका इख़्तिलाफ़ इज्तिहादी था।”

मीरास और वफ़ात हज़रत मुआविया ﷺ का इंतिकाल 60 हिजरी में हुआ। आपके दौर में इस्लाम एक आला हुकूमत में बदल चुका था, और आपने एक ऐसा निज़ाम छोड़ा जिसने आगे कई सौ साल तक दुनिया पर हुकूमत की।

अहल-ए-सुन्नत का अकीदा है कि:

“यह जंग इज्तिहादी थी। दोनों जानिब सहाबा थे, और दोनों की नीयत उम्मत की भलाई थी। हज़रत अली ﵁ का इज्तिहाद राजिह था। मगर हज़रत मुआविया ﵁ भी ग़लती पर थे लेकिन उन्हें अजर मिलेगा।”

अहले-सुन्नत वल-जमाअत का यक़ीन है कि:

“गुनाह मुसलमान को काफ़िर नहीं बनाता, जब तक वो किसी बुनियादी अकीदे का इनकार ना करे।” “सहाबा किराम की अदावत, गाली या तक़फीर करना, इस्लामी उसूलों के खिलाफ़ है।”

बरेलवी सुन्नियों के अक़ाइद

क़ुरआन और रसूलुल्लाह की पेशनगोइ के मुताबिक हज़रत हसन ﵁ नें आमिरे मुआविया को मोमिन माना तब ही तो सुलह कराया यानी एक अहले बैत का अक़ीदा की आमिरे मुआविया मोमिन है मगर नाम निहाद मौलाई जो मोहब्बते अहले बैत के फर्जी दावा तो है लेकिन अक़ाइद अहले बैत के मुखालिफ है।

अल्हम्दुलिल्लाह आज हम सुन्नी बरेलवियों का भी यही अक़ीदा है की आमिरे मुआविया मोमिन है बवाजुद इसके की वो हज़रत अली से लड़े और मुख़ालिफत की जैसा कि हज़रत हसन रदीयल्लाहु अन्हू आमिरे मुआविया को मोमिन जानकर सुलाह कराकर ख़िलाफ़त दिए।

बरेलवी ही हक़ जमाअत है

हक़ जमात की अलामत - अल्लाह कुरआन में फरमाता है (तर्जुमा) : ‘‘तुम न पाओगे उन (वैसे) लोगों को जो यक़ीन (ईमान) रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती (इत्तेहाद) करें उनसे (वैसो से) जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की, अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे (रिस्तेदार) वाले हों ये (लोग) हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहें, अल्लाह उनसे राज़ी और वो

अल्लाह से राज़ी यह अल्लाह की जमाअत है सुनता है अल्लाह ही की जमाअत कामयाब है''। (सूरह मुजादिला, आयत 22)

इस दौर में वो जमाअत बरेलवी ही है - बिला शुबा इस दौर में वो जमात मस्लके आला हज़रत के मुताबिक चलने वाली तहरीक, तंजीम, खानकाह, मदारिस यानी रज़वी/बरेलवी है। इसलिए शारेह बुखारी हज़रत मुफ्ती शरीफउल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया '' अगर रज़वी ना हो तो किसी खाऩक़ाह का वजूद बाकी न रहेगा, रज़वियों ही की ललकार से देवबंदियत लरज़ती है और सुन्नियत पनपती है।

इस दौर में देखा सकता है कि बरेलवी सख्ती के साथ बातिल फिरकों जैसे खारजी, राफजी, कादियानी, वहाबी, देवबंदी, अहले हदीस, अहले कुरआन, जमाते इस्लामी वगैरह का रद्द करते या रही है वही ग़ैर बरेलवी सुन्नी सुलहकुल्ली खामोशी या इत्तेहाद के नारे लगाते है और और रद्दे बातिल से रोकते है नतीजा सुलहकुल्लियत जैसे फ़ित्ने जन्म ले रहे है।

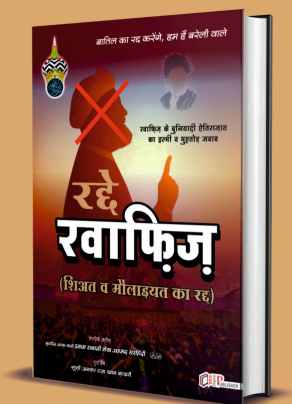
बरेलवियों में सहाबीयों वाली सिफत - कुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है तर्जुमा कंजुल ईमान : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले यानी सहाबा काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल । (सूरह फत्ह, आयत नं. 29)

सच्चे मुहिब और मोमिन बरेलवी ही है - ईमामे रब्बानी मुजदिदे अल्फ़ेसानी शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है : ''जब तक ख़ुदा और रसूल के दुश्मनों के साथ दुश्मनी ना रखी जाए, उस वक़्त तक ख़ुदा और रसूल के साथ महब्बत नहीं हो सकती। (जि.1, मक्तूब-266)''

नोट : आज बातिल से इत्तेहाद और सुलहकूलियत का फ़ितना और बुरा को बुरा न कहो , कापिर को कापिर ना कहो का फ़ितना, हक व बातिल एक हो जाओ का फ़ितना मे सिर्फ बरैलवी ही अकेला एक जमात है जिसका अमल कुरआन, हदीस और अकाबिर-ए-अहले सुन्नत के बताए हुए उसूलों पर कायम है इसलिए बरैलवी ही हक़ जमात है ।

Related New कुतूब (2026)

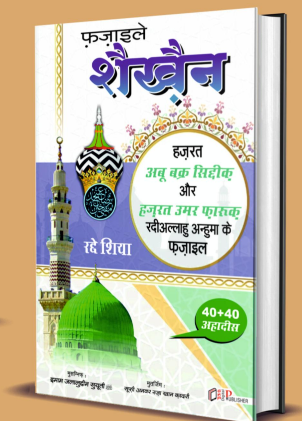
GKR Digital PUBLISHER



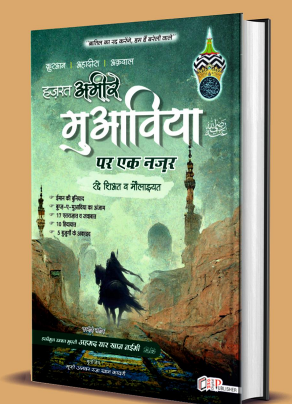
Click PDF to DOWNLOAD



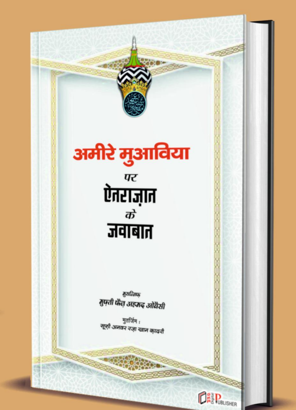
Click PDF to DOWNLOAD



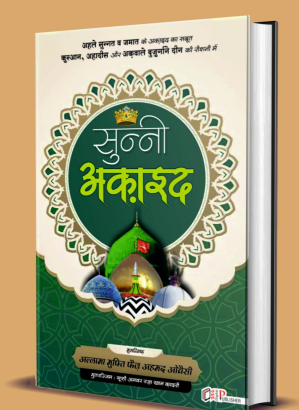
Click PDF to DOWNLOAD



Click PDF to DOWNLOAD



Click PDF to DOWNLOAD



Click PDF to DOWNLOAD

Comming Soon More New Books

www.ghausokhwajaorazatrust.com